हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 266, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 29 मार्च, 2024 दिन शुक्रवार गाजीपुर/वाराणसी

एक वोट बदल सकता है देश की तकदीर : योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री ने मुजफ्फरनगर में मंच से चौधरी साहब को किया याद

मुजफ्फरनगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज मुजफ्फरनगर लोकसभा के प्रबुद्ध सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे। सीएम योगी के कार्यकम के लिए सुबह से ही कार्यकर्ता पहुंचने शुरू हो गए। जिले के जानसठ रोड स्थित लाला जगदीश प्रसाद स्कूल में आज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाजपा-रालोद गठबंधन के प्रत्याशी डॉ. संजीव बालियान के चुनाव के लिए कार्यक्रम आहूत किया गया है। कार्यकम स्थल पर कड़े सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं। सीएम योगी मंच पर पहुंचते ही कार्यकताओं ने नारे लगाकर उनका स्वागत किया। सीएम योगी आदित्यनाथ मंच पर पहुंचे और चौधरी चरण सिंह को याद करते हुए अपना संबोधन शुरू किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भागवत की भूमि को दुनिया शुकतीर्थ के रूप में जानती है। शुकतीर्थ को पुराना वैभव लौटाने का काम भाजपा सरकार ने किया। जनभावना के अनुरूप काम किया। दुनिया में किसी के पास पांच हजार वर्ष पुराना इतिहास नहीं, लेकिन मुजफ्फरनगर के पास है। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब को

सम्मान पहले मिलना चाहिए था। वर्ष 2004 से 2014 के बीच की सरकारों ने उन्हें यह सम्मान नहीं दिया। देश के विकास का रास्ता गांव और खलिहान से होकर जाता है, यह बात चौधरी साहब ने ही कही थी। सीएम योगी ने कहा कि वह आज समाज के नेतृत्व वर्ग से मिलने आए हैं। एक वोट देश की तकदीर बदल सकती है। वोट गलत हाथों में जाता था तो मुजफ्फरनगर में कर्फ्यू लगता था और सही हाथों में वोट जाने से कांवड़ यात्रा निकल रही है। गलत हाथों में वोट जाने के दिनों में यहां लोग आने से डरते थे। अब सही हाथों में वोट गया तो अराजकता समाप्त हो गई। उन्होंने कहा कि पांच सौ वर्षों के बाद वोट की ताकत ने ही आस्था को सम्मान दिलाया है। यूपी में अब तक 18 लाख पीएम स्वनिधि योजना में ऋण की स्वीकृति हुई है। वोट की कीमत समाज को बतानी होगी। एक तरफ फैमिली फर्स्ट और दूसरी तरफ नेशन पहले है। वे जातिवाद की बात करते हैं और मोदी गरीब कल्याण की बात करते हैं। वह तुष्टीकरण की बात करते हैं और मोदी सबका साथ सबका विकास की बात करते हैं। सीएम योगी ने कहा कि पश्चिम उत्तर प्रदेश में 2017 से पहले तनाव का माहौल था। सरधना में पहला खेल विश्वविद्यालय बन रहा है। अब किसी बेटी पारुल चौधरी को अभ्यास में मुश्किलें नहीं होगी। खिलाड़ियों को नई सुविधाएं दी जाएंगी। बेटी, व्यापारी और किसान की सुरक्षा में कोई सेंध नहीं लगा पाएगा। सीएम योगी ने कहा कि सपा, बसपा और कांग्रेस के लोग अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण नहीं करा पाते। नए भारत में आजीविका और आस्था भी है। तीन वर्ष में देश को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना है। गर्मी, बरसात आंधी या तूफान की परवाह नहीं करनी है। देश को दुनिया की महाशक्ति बनाने के लिए मतदान करें। विकसित भारत के लिए उत्तर प्रदेश विकसित होगा। प्रधानमंत्री मोदी के आने के बाद पूरे देश में हम एक नए भारत का दर्शन कर रहे हैं। कहा कि आज भारत सही दिशा में आगे बढ़ चुका है। क्या अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण ये सपा, बसपा या कांग्रेस के लोग करवा पाते क्या? पिछले दो महीने के अंदर अयोध्या में 1.5 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं ने दर्शन किए हैं।

यूपी एटीएस ने तीन महिलाओं सहित चार रोहिंग्या नागरिकों को किया गिरफ्तार

लखनऊ। यूपी एटीएस ने अवैध रूप से भारत-बांग्लादेश सीता पार कर कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर स्वयं को भारतीय नागरिक बताने वाले तीन महिलाओं सहित चार रोहिंग्या नागरिकों को कानपुर से गिरफ्तार किया है। ये सभी ट्रेन द्वारा सिलचर, असम से दिल्ली जा रहे थे। एटीएस उन्हें गिरफ्तार कर मुख्यालय ले गई। जहां उनसे पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वह मूल रूप से म्यांमार के निवासी हैं और यहां रहने के लिए बांग्लादेश के रास्ते भारत आए थे। खुद को भारतीय नागरिक बताने के उद्देश्य से उन्होंने फर्जी दस्तावेज भी तैयार करवाए थे। एटीएस को उनके पास से फर्जी आधार कार्ड मिला है। यूपी एटीएस की टीम ने रोहिंग्या नागरिक आमिर हमजा पुत्र इमाम हुसैन, मीना जहां पुत्री नूर आलम, सुकुरा बेगम पुत्री हसमतुल्लाह व ओनारा बेगम पुत्री मोहम्मद सलीम को गिरफ्तार किया है। एटीएस को उनके पास से एक मोबाइल फोन व सभी के पास एक-एक आधार कार्ड बरामद हुआ है।

दिल्ली हाईकोर्ट से केजरीवाल को राहत, जनहित याचिका खारिज, बने रहेंगे मुख्यमंत्री

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाने की मांग वाली याचिका खारिज हो गई है। दिल्ली हाईकोर्ट में याचिकाकर्ता सुरजीत सिंह यादव ने याचिका दायर की थी। जिसमें उन्होंने अरविंद केजरीवाल को सीएम पद से हटाने की मांग की थी। याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया था कि केंद्र सरकार, दिल्ली सरकार एवं उपराज्यपाल के प्रधान सचिव से यह बताने को कहा जाए कि किस अधिकार के तहत केजरीवाल मुख्यमंत्री पद पर बने हुए हैं। एक वित्तीय घोटाले के आरोपी मुख्यमंत्री को सार्वजनिक पद पर बने रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

अरविंद केजरीवाल को सीएम पद से हटाने के लिए याचिकाकर्ता सुरजीत सिंह यादव ने बताया कि हाईकोर्ट में जो जनहित याचिका दायर की। उसमें मैंने कई पहलूओं को बताया। उन्होंने कहा कि पहला पहलू गोपनीयता का है। दूसरा जब वह कैबिनेट मीटिंग नहीं ले पाएंगे, मसलन पिछली बार यमुना में बाढ़ के कारण कैबिनेट मीटिंग हुई थी और फैसले लिए गए थे, वो नहीं हो सकते। आगे तीसरा कारण बताते हुए कहा कि दिल्ली में सीएम हर विभाग के काम के बारे में दिल्ली एलजी को रिपोर्ट सौंपते हैं ऐसा भी नहीं हो सकता। आगे कहा कि सीएम की जिम्मेदारी संभालना और एक सीएम के रूप में जेल से काम करना संभव नहीं है। इसलिए कोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई। याचिका में सीएम पद हटाने की मांग की है। एक सीएम के रूप में उन्हें जो मासिक वेतन मिलता है एक विधायक से भी ज्यादा होता है। इसलिए अगर वह सीएम के रूप में काम करने में सक्षम नहीं है तो उस पैसे को भी न दिया जाए। याचिकाकर्ता सुरजीत सिंह यादव दिल्ली के रहने वाले हैं। वह अपने आप को किसान और सामाजिक कार्यकर्ता होने का दावा करते हैं। यादव ने तर्क रखा कि केजरीवाल के पद पर बने रहने से न केवल कानून की उचित प्रक्रिया में बाधा आएगी और न्याय की प्रक्रिया बाधित होगी, बल्कि राज्य में संवैधानिक तंत्र भी टूट जाएगा। केजरीवाल ने गिरफ्तार होने के कारण एक तरह से मुख्यमंत्री के रूप में अपना पद खो दिया है और चूंकि वह हिरासत में हैं, इसलिए उन्होंने एक लोक सेवक होने के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को निभाने से खुद को अक्षम कर लिया है और इस तरह उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए कि मुख्यमंत्री बने रहें।

यादव ने कहा कि जेल में बंद सीएम किसी भी व्यवसाय को करने में असमर्थ होगा जिसका कानून उसे आदेश देता है और अगर उसे ऐसा करने की अनुमति दी जाती है तो किसी भी सामग्री को चाहे वह गुप्त प्रकृति की हो जेल में उन तक पहुंचने से पहले जेल अधिकारियों द्वारा पूरी तरह से उसे स्कैन करेगी। केजरीवाल के हाथ और ऐसा कृत्य सीधे तौर पर संविधान की तीसरी अनुसूची के तहत सीएम को दिलाई गई गोपनीयता की शपथ का उल्लंघन होगा।

जंगल में जाएंगे, बर्फ में जाएंगे, हेलिकॉप्टर से जाएंगे, हाथी-घोड़े से जाएंगे, 'अंतिम मतदाता' तक पहुंचने के लिए चुनाव आयोग ने कसी कमर

नई दिल्ली। लोकसभा चुनावों में मतदान प्रक्रिया को संपन्न कराने के लिए चुनाव आयोग अपनी तैयारियों में जुटा हुआ है। गिर के जंगलों से लेकर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित गांवों में मतदान कराने के लिए चुनाव आयोग और मतदान कर्मियों को काफी मशक्कत का सामना करना पड़ता है। इसके लिए चुनाव आयोग की टीमें जंगलों और बर्फ से ढके पहाड़ों को पार करते हुए, लाइफ जैकेट पहनकर नदियों को पार करते हुए, मीलों तक ट्रैकिंग करते हुए और घोड़ों और हाथियों पर ईवीएम लेकर सुदूर कोने और सबसे दुर्गम स्थान पर पहुंचती हैं। चुनाव आयोग की इस पूरी कवायद के पीछे यही सोच है कि एक भी वोटर अपने मताधिकार से वंचित न रह जाए। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार के अनुसार, मतदान दल को ईवीएम लेकर सबसे दूर, कठिन और दुर्गम इलाकों से गुजरना पड़ता है। इसके पीछे मकसद यही है कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी मतदाता

न छूटे। इसी महीने उन्होंने चुनावों का एलान करते हुए कहा, "हम अतिरिक्त मील चलेंगे ताकि मतदाताओं को ज्यादा न चलना पड़े। हम बर्फीले पहाड़ों और जंगलों में जाएंगे। हम घोड़ों और हेलीकाप्टरों और पुलों पर जाएंगे और यहां तक कि हाथियों और खच्चरों पर भी सवारी करेंगे, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हर वोटर अपना वोट डाल सके।" लोकसभा चुनावों में मणिपुर के आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के लिए राहत शिविरों में मतदान करने के लिए कुल 94 विशेष मतदान केंद्र स्थापित किए जाएंगे। पिछले साल मई से मणिपुर में मैतेयी और आदिवासी कुकी समुदायों के बीच जातीय संघर्ष में 200 से अधिक लोगों की जान चली गई है। 50 हजार से ज्यादा विस्थापित लोग इन बूथों पर मतदान करने के पात्र होंगे जो राहत शिविरों में या उसके निकट स्थापित किए जाएंगे। चुनाव आयोग के रिकार्ड के अनुसार, हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति में ताशीगंग में दुनिया का सबसे ऊंचा मतदान केंद्र है। इस मतदान केंद्र की ऊंचाई समुद्र तल से 15,256 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

नानकमत्ता में बाबा तरसेम सिंह की हत्या के बाद पीलीभीत में अलर्ट, पुलिस कर रही चेकिंग

पीलीभीत। पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में स्थित नानकमत्ता गुरुद्वारा में कारसेवा प्रमुख बाबा तरसेम सिंह की गोली मारकर हत्या कर दिए जाने की घटना को लेकर तराई के इस जिले में अलर्ट घोषित कर दिया गया है। इस गुरुद्वारा से जिले के तमाम सिखों का गहरा जुड़ाव होने के मद्देनजर शांति एवं सुरक्षा के लिए पुलिस अधीक्षक की ओर से निर्देश जारी किए गए हैं। तराई के जिले में शहर के साथ ही उत्तराखंड बार्डर की नगर पंचायत गुलड़िया भिंडारा, अमरिया, न्यूरिया, माधोटांडा, कलीनगर, पूरनपुर, गजरौला, बिलसंडा आदि में बड़ी संख्या में सिख रहते हैं। इन सभी का नानकमत्ता गुरुद्वारा से काफी गहरा धार्मिक जुड़ाव है। कारसेवा प्रमुख बाबा तरसेम सिंह जिले के विभिन्न गुरुद्वारों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए आते रहे थे। सिख समाज में वह काफी सम्मानित हस्ती माने जाते थे। पुलिस अधीक्षक अविनाश पांडेय के अनुसार अमरिया, न्यूरिया, हजारा,सेहरामऊ उत्तरी, बिलसंडा, गजरौला, पूरनपुर आदि

थानों की पुलिस को अलर्ट कर दिया गया है। निर्देश दिए गए हैं कि वाहनों की चेकिंग के साथ ही शांति एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लगातार गश्त की जाए। उन्होंने बताया कि उत्तराखंड बार्डर से लगे इलाकों में पहले से ही चेकिंग की व्यवस्था चल रही है।

वरुण का भावुक पत्र: मैं आपका था, हूं और रहूंगा... पीलीभीत से अंतिम सांस तक खत्म नहीं होगा रिश्ता

बरेली। पीलीभीत से मेनका गांधी और उनके बेटे वरुण गांधी का पिछले 35 साल से चला आ रहा सियासी रिश्ता बुधवार को खत्म हो गया। 1989 के बाद यह पहली बार हुआ कि जब दोनों में से किसी ने भी पीलीभीत सीट से पर्चा नहीं भरा। भाजपा ने वरुण गांधी का टिकट काटकर यूपी के कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद को प्रत्याशी बनाया है। पीलीभीत से सियासी रिश्ता टूटने पर वरुण गांधी ने भावुक पत्र लिखा है। उन्होंने लिखा है कि मेरा और पीलीभीत का रिश्ता प्रेम और विश्वास का है, जो राजनीतिक गुणा-भाग से बहुत ऊपर है। वरुण गांधी ने पीलीभीत के लोगों को प्रणाम करते हुए लिखा, 'मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे वर्षों पीलीभीत की महान जनता की सेवा करने का मौका मिला। महज एक सांसद के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के तौर भी मेरी परवरिश और मेरे विकास में पीलीभीत में मिले आदर्श, सरलता, और सहृदयता का बहुत बड़ा योगदान है। आपको प्रतिनिधि होना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान रहा है और मैंने हमेशा अपनी पूरी क्षमता से आपके हितों के लिए आवाज उठाई है।' आज जब मैं यह पत्र लिख रहा हूं, तो अनगिनत यादों ने मुझे भावुक कर दिया है। उन्होंने अपने बचपन

की यादों को साझा करते हुए लिखा, मुझे वो तीन साल का छोटा सा बच्चा याद आ रहा है, जो अपनी मां की अंगुली पकड़कर 1983 में पहली बार पीलीभीत आया था, उसे कहां पता था कि एक दिन यह धरती उसकी कर्मभूमि और यहां के लोग उसका परिवार बन जाएंगे। पत्र में आगे लिखा कि एक सांसद के तौर पर मेरा कार्यकाल भले समाप्त हो रहा हो, पर पीलीभीत से मेरा रिश्ता अंतिम सांस तक खत्म नहीं हो सकता। मैं राजनीति में आम आदमी की आवाज उठाने आया था और आज आपसे यही आशीर्वाद मांगता हूं कि सदैव यह कार्य करता रहूं, भले ही उसकी कोई भी कीमत चुकानी पड़े। उन्होंने पीलीभीत से अपने रिश्ते को सियासी गुणा-भाग से बहुत ऊपर बताया। अंत में लिखा- मैं आपका था, हूं और रहूंगा। वरुण गांधी की वजह से पीलीभीत प्रदेश में वीआईपी सीट बनी हुई है। 2009-2010 में वरुण भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव भी रह चुके हैं। चर्चा है कि पार्टी वरुण को संगठन में कोई बड़ा पद दे सकती है। चर्चा यह भी है कि वरुण को अवध क्षेत्र की किसी वीआईपी सीट से उतारा जा सकता है। यह सब कयास इसलिए लगाए जा रहे हैं कि वरुण ने टिकट कटने के बाद भी न तो भाजपा छोड़ी है और न ही ऐसा कोई संकेत दिया है।

महागठबंधन के सीट शेयरिंग पर मंत्री गिरिराज सिंह ने ली चुटकी, कहा- कांग्रेस ऊहापोह की स्थिति में

बेगूसराय। बेगूसराय पहुंचे केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने एक बार फिर महागठबंधन एवं लालू यादव पर पलटवार किया है। गिरिराज सिंह ने कहा कि लालू यादव राजा की भूमिका में है और महागठबंधन का कोई वजूद नहीं है। लालू यादव जो चाहते हैं वही करते हैं। बिहार में अब कांग्रेस का भी कोई अस्तित्व नहीं रह गया है, यही वजह है कि प्रथम पेज के नॉमिनेशन का अंतिम दिन होने के बावजूद भी कांग्रेस ऊहापोह की स्थिति में है कि कहां से अपना कैंडिडेट खड़ा करें और कहां से नहीं। गिरिराज सिंह ने कहा कि लालू यादव तो सीट शेयरिंग से पहले ही कई जगहों पर उम्मीदवार की घोषणा कर चुके हैं और कामोबेश यही स्थिति पूरे देश की है। अगर महाराष्ट्र की ही बात की जाए तो कहीं से उद्धव ठाकरे अपना प्रत्याशी खड़ा कर रहे हैं तो कहीं से कोई और, सिर्फ नाम का ही महागठबंधन रह गया है। महागठबंधन के नेताओं का सिर्फ एक ही काम रह गया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कैसे नीचा दिखाया जाए और कैसे उन्हें गाली

दी जाए। जनता सब समझ रही है और आगे इसका जवाब भी दिया जाएगा। दरअसल, केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह से पत्रकारों ने बिहार में कांग्रेस की स्थिति और पप्पू यादव को टिकट नहीं मिलने के संबंध में सवाल किया था, उसी के जवाब में गिरिराज सिंह ने उक्त बातें कही है।

अग्निवीर भर्ती योजना : जरूरत पड़ी तो हम बदलाव के लिए तैयार : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को दो टूक शब्दों में कहा कि भारत और इसकी सीमाएं पूरी तरह सुरक्षित है। देश के नागरिकों को सशस्त्र बलों पर पूरा भरोसा होना चाहिए। अग्निवीर योजना की आलोचना पर एक सवाल का जवाब में राजनाथ सिंह ने कहा कि ऐसे सवालों का कोई औचित्य ही नहीं है। हालांकि उन्होंने कहा कि अगर आवश्यक हुआ तो उनकी सरकार अग्निवीर भर्ती योजना में परिवर्तन करने के लिए तैयार है। केंद्रीय मंत्री ने यह भी कहा कि सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि अग्निवीरों का भविष्य सुरक्षित रहे। सेना में युवावस्था होनी चाहिए। मुझे लगता है कि युवा अधिक उत्साही हैं। वे अधिक तकनीक प्रेमी हैं। हमने इस

बात का उचित ध्यान रखा है कि उनका भविष्य भी सुरक्षित है, जरूरत पड़ी तो बदलाव भी करेंगे। युवा प्रोफाइल के लिए हर कोई स्वीकार करेगा कि सशस्तर बलों को ऐसा करना चाहिए। दिल्ली में आयोजित एक निजी कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अपनी लगभग 50 साल लंबी राजनीतिक यात्रा के किस्से भी साझा किए। भारत-चीन सीमा मुद्दे पर विपक्ष के नेताओं के सदस्यों समेत कई लोगों द्वारा उठाए गए सवालों पर उन्होंने कहा कि जो देश के हित में है वो मैं सब विपक्ष के साथ साझा करता हूं लेकिन कुछ चीजें है जिनका रणनीतिक महत्व है और हम उन्हें सार्वजनिक रूप से नहीं बता सकते हैं। कुछ मुद्दों पर सार्वजनिक रूप से बोलने से बचने की कोशिश करता हूं। सीमा सुरक्षा के मुद्दे पर बोलते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि मैं देश के हर नागरिक को आश्वास्त करना चाहता हूं कि उन्हें हमारी सेना और सुरक्षा कर्मियों पर पूरा भरोसा होना चाहिए। पूर्वी लद्दाख में के कुछ इलाकों पर भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच साढ़े तीन साल से अधिक समय से टकराव चल रहा है, जबकि दोनों पक्षों ने व्यापक राजनयिक और सैन्य वार्ता के बाद कई क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी पूरी कर ली है। एक निजी कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पांच साल तक रक्षा मंत्री और उससे पहले गृह मंत्री रहने के दौरान, मैंने जो देखा, समझा और आकलन किया है, उसके आधार पर मैं सभी से कह रहा हूं कि हमारी सीमाएं सुरक्षित हाथों में है। गौरतलब है कि पैंगोंग झील क्षेत्र में हिंसक झड़प के बाद 5 मई, 2020 को पूर्वी लद्दाख सीमा पर गतिरोध पैदा हो गया। जून 2020 में गलवान घाटी में हुई झड़प के बाद भारत और चीन के बीच संबंधों में काफी गिरावट आई, जो दशकों में दोनों पक्षों के बीच सबसे गंभीर सैन्य संघर्ष था।

मेरठ से उज्जैन जा रही गाड़ी मुंबई एक्सप्रेसवे पर डिवाइडर से टकराई, चार की मौत, तीन घायल

नूंह। नूंह के पिनगवां थाना क्षेत्र में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर मेरठ से उज्जैन जा रही इकोस्पोर्ट गाड़ी गुरुवार सुबह साढ़े छह बजे डिवाइडर से टकरा गई। इस हादसे में मां, बेटा और महिला के दो भांजो की मौत हो गई। इसके अलावा तीन लोग घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और घायलों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया। यह हादसा नूंह जिले के थाना पिनगवां के गांव झिंमरावट के पास हुआ है। बताया जा रहा है कि इकोस्पोर्ट सवार सभी लोग मेरठ के गांव बेहसुमा से उज्जैन जा रहे थे। इसी दौरान दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस पर गाड़ी डिवाइडर से टकरा गई। पुलिस के अनुसार, ये सभी लोग मेरठ के रहने वाले हैं। फिलहाल पुलिस इस मामले की जांच में जुट गई है। सभी शवों को मंडी खेड़ा के अल आफिया अस्पताल भेज दिया गया है।

संपादकीय

गाजा में रुके युद्ध

उम्मीद की जानी चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पारित प्रस्ताव के बाद इस्त्राइल गाजा पर निरंतर जारी हमलों पर रोक लगाएगा। उल्लेखनीय है कि सोमवार को पारित प्रस्ताव में सुरक्षा परिषद ने रमजान के महीने के दौरान गाजा में तुरंत युद्धविराम लागू करने, बंधकों की बिना शर्त रिहाई तथा युद्धग्रस्त इलाकों में मानवीय सहायता सुनिश्चित करने को कहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि मतदान से दूरी बनाकर अमेरिका ने संकेत दिया है कि वह गाजा मे शांति प्रयासों को साकार होता देखता चाहता है। वहीं अमेरिका का प्रस्ताव को वीटो न करना यूएसए व इस्त्राइल संबंधों में खटास आने का भी संकेत है। जिसको लेकर इस्त्राइल के नेता अमेरिका पर हमलावर हैं। इस्त्राइल ने अपने सदाबहार दोस्त अमेरिका पर संकट के समय साथ न देने का आरोप लगाया है। यहां तक कि इस्त्राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक इस्त्राइली प्रतिनिधिमंडल की अमेरिका यात्रा रद्द करके अपनी नाराजगी जाहिर की है। हालांकि, कहना कठिन है कि इस्त्राइल और हमास सुरक्षा परिषद के पारित प्रस्ताव का किस हद तक पालन करते हैं, लेकिन एक बात तो तय है कि फिलहाल अमेरिका व इस्त्राइल के रिश्तों में खटास आ चुकी है। हालांकि, अब तक बाइडेन प्रशासन इस्त्राइल को पर्याप्त सैन्य मदद देता रहा है और हमास को समाप्त करने के उसके लक्ष्य का समर्थन भी करता आया है। लेकिन इसके बावजूद अमेरिका चाहता रहा है कि संघर्ष में आम लोगों की मौत कम से कम हो। उल्लेखनीय है कि 7 अक्तूबर 2023 को इस्त्राइल पर हुए हमास के क्रूर आतंकवादी हमले के बाद इस्त्राइल के जवाबी हमले में बत्तीस हजार से अधिक फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं। जिसमें बड़ी संख्या में बच्चे व महिलाएं भी शामिल हैं। हमले से गाजा का एक बड़ा हिस्सा खंडहर में तब्दील हो गया है। लाखों लोगों ने पलायन किया है और एक बड़ी आबादी भुखमरी के कगार पर पहुंच गई है। इस अभूतपूर्व मानवीय संकट के बावजूद इस्त्राइली हमले जारी हैं। विडंबना यह है कि तमाम अंतर्राष्ट्रीय दबाव के बावजूद दोनों ही युद्धरत पक्षों के रुख में नरमी नहीं आ रही है। जहां इस्त्राइल के हमले जारी हैं, वहीं अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थों द्वारा पेश युद्धविराम व बंधकों की रिहाई के लिये मध्यस्थता के नये प्रस्ताव को हमास ने खारिज कर दिया है। वहीं इस्त्राइल का कहना है कि सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव से आतंकवादी समूहों को बढ़ावा मिल सकता है। लेकिन इसके बावजूद एक हकीकत यह भी है कि वैश्विक जगत में गाजा में जारी युद्ध के चलते इस्त्राइल अलग-थलग पड़ता जा रहा है। साथ ही वह अब अमेरिकी समर्थन को गारंटी के रूप में नहीं ले सकता। फिलहाल अंतर्राष्ट्रीय समुदाय इस्त्राइल पर युद्धविराम के लिये दबाव बढ़ाने की तरफ अग्रसर है जिससे गाजा में शांति का मार्ग प्रशस्त किया जा सके। गाजा में मानवीय संकट को तुरंत समाप्त करने के लिये भी यह जरूरी है। वहां फिलहाल भूख भी एक बड़ा संकट बनकर सामने खड़ी है। बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा पारित युद्ध विराम के प्रस्ताव के बाद उम्मीद जगी है कि इस्त्राइल अपनी आक्रामकता में कुछ कमी लाएगा। वहीं हमास को भी इस्त्राइल पर किये गए हमले में बंधक बनाये गए इस्त्राइली नागरिकों की रिहाई पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। जिससे गाजा में मानवीय सहायता का मार्ग प्रशस्त हो सके। हमास को भी सोचना चाहिए कि पिछले छह माह में पहली बार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में युद्धविराम का प्रस्ताव पारित हो सका है। हमास को इसे गाजा में शांति स्थापना की दिशा में एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। इस मामले में अमेरिका की ओर से वीटो का इस्तेमाल न करना भी एक अच्छा संकेत है। इससे पहले अमेरिका तीन बार ऐसे प्रस्तावों को वीटो कर चुका है। हमास को महसूस करना चाहिए कि इस प्रस्ताव के पारित होने के मूल में शांति की दिशा में दुनिया की तीव्र आकांक्षा भी है।

तेजी से प्रचार !

धुआंधार रैली और ।
तेजी से प्रचार ।।
अपनी और पार्टी की ।
है लानी बहार ।।
धीरे-धीरे बढ़कर ।
आ गए नजदीक ।।
है अब पूरी कोशिश ।
प्रहार हो सटीक ।।
उसी दिशा में अग्रसर ।
है लगाया जोर ।।
बढ़ जाए मुनाफा ।
रहे आज झकझोर ।।
खोलेंगे फिर पत्ते ।
हो जाए बस जीत ।।
रहा कुरेद बार बार ।
अपना जो अतीत ।।

-कृष्णेन्द्र राय

महाविकास अघाड़ी में फूट, प्रकाश अंबेडकर गए रूठ, महाराष्ट्र में INDIA ब्लॉक का गणित बिगाड़ देगा अकोला पैटर्न?

अभिनय आकाश

महाराष्ट्र की राजनीति इन दिनों सबसे जटिल नजर आ रही है। एनडीए में जहां इन दिनों सीट शेयरिंग को लेकर खार परेशानी नहीं है। वहीं एमवीए में खींचतान सबसे ज्यादा है। इन सब के बीच जो सबसे अहम है वो सर्वाइवल है। ऐसा इसलिए क्योंकि ये चुनाव कई सियासी दिग्गजों का भविष्य तय करने वाला है। जो सर्वाइव करेगा वो टिकेगा और जो सर्वाइव नहीं कर पाएगा उसका सियासी वजूद भी दांव पर लग जाएगा। महाविकास अघाड़ी में फूट पड़ती नजर आ रही है। शिवसेना उद्धव गुट ने 17 उम्मीदवारों के नाम का ऐलान कर दिया। इनमें से 3 सीटों पर कांग्रेस के दावेदार टिकट का इंतजार कर रहे थे। वहीं वंचित बहुजन अघाड़ी के प्रकाश अंबेडकर ने महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी या एमवीए से नाता तोड़ लिया है और घोषणा की है कि पार्टी 2024 के लोकसभा चुनाव अकेले लड़ेगी।

उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट ने महाराष्ट्र में आगामी लोकसभा चुनावों के लिए 16 उम्मीदवारों की घोषणा की, जहां वे विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक के हिस्से के रूप में चुनाव लड़ेंगे। वरिष्ठ नेता अनिल देसाई के नाम की घोषणा पहले ही कर दी गई थी। उद्धव ठाकरे की पार्टी के 17 लोकसभा उम्मीदवारों में देसाई के अलावा पूर्व केंद्रीय मंत्री अनंत गीते और अरविंद सावंत प्रमुख नामों में शामिल हैं। पार्टी सांसद गजानन कीर्तिकर के बेटे अमोल कीर्तिकर को भी लोकसभा उम्मीदवार बनाया गया है। अनिल देसाई को मुंबई दक्षिण मध्य लोकसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया गया है, जबकि अमोल कीर्तिकर को उत्तर पश्चिम मुंबई से और अरविंद सावंत को दक्षिण मुंबई से उम्मीदवार बनाया गया है।

महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी (एमवीए) दलों के बीच दरार तब खुलकर सामने आ गई जब कांग्रेस नेता संजय निरुपम ने आगामी लोकसभा चुनावों के लिए मुंबई की चार सीटों के लिए समय से पहले उम्मीदवारों की घोषणा करने के लिए शिवसेना (यूबीटी) पर तीखा हमला बोला। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, निरुपम ने कहा कि मुंबई उत्तर-पश्चिम सीट के लिए अमोल कीर्तिकर की उम्मीदवारी की घोषणा गठबंधन धर्म का उल्लंघन बताया और उन्होंने शिव सेना (यूबीटी) नेता को खिचड़ी चोर कहा। निरुपम ने उद्धव सेना गुट पर बिना किसी रोक-टोक के हमला बोलते हुए कहा कि शिवसेना ने एक खिचड़ी चोर को टिकट दिया है। हम खिचड़ी चोर उम्मीदवारों के लिए काम नहीं करेंगे। वरिष्ठ कांग्रेस नेता संजय निरुपम नाराज हैं, वे मुंबई नॉर्थ-वेस्ट से लोकसभा लड़ने की तैयारी कर रहे थे। उन्हें खुद राहुल गांधी ने टिकट का भरोसा दिया था। इन दिनों राज ठाकरे को लेकर महाराष्ट्र की राजनीति में चचाओं का बाजार काफी गर्म रहा। कहा जा रहा है कि वो एनडीए में शामिल हो रहे हैं। जिससे एनडीए का कुनबा काफी बड़ा हो जाएगा। सीएम शिंदे के सामने एक बड़ा प्रेशर है। बीजेपी के बाद सबसे ज्यादा सीटें शिंदे सेना को मिल रही हैं। ऐसे में अगर एकनाथ शिंदे शिवसेना का कोर वोट अपने साथ नहीं ला पाते हैं तो उनकी आगे राह बहुत मुश्किल होगी। इसे हम बिहार के चिराग मॉडल से समझ सकते हैं। बीजेपी द्वारा पशुपति पारस के बजाए चिराग पासवान को तरजीह देना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। अकोला में एक संवाददाता सम्मेलन में प्रकाश अंबेडकर ने बुधवार को आठ उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर दी। अंबेडकर ने आरोप लगाया कि एमवीए गठबंधन में मनोज जरांगे पाटिल फैक्टर पर विचार करने के लिए तैयार नहीं था। उन्होंने आरोप लगाया कि एमवीए अपनी वंशवाद की राजनीति को बचाने के लिए वीबीए का इस्तेमाल करना चाहता था। वीबीए लगातार बयान दे रहा था और अपने समर्थकों को सीट-बंटवारे के फॉर्मूले में प्रगति के बारे में सूचित कर रहा था। एमवीए घटकों के बीच 15 संसदीय क्षेत्रों को लेकर विवाद है।

महाराष्ट्र की सियासत में प्रकाश आंबेडकर इतने अहम क्यों हैं? पहला- बाबा साहेब के पोते होने के नाते उनकी विरासत का प्रतीक है। दूसरा, पेशे से वकील प्रकाश आंबेडकर ने राज्य में दलितों, अल्पसंख्यों सहित हर तरह के वंचितों के लिए बकायदा रणनीतिबद्ध तरीके से काम किया, उनसे खुद को जोड़ा, जिसकी वजह से वह दलितों और वंचितों का एक बड़ा चेहरा बने। महाराष्ट्र की राजनीति में इसे अकोला पैटर्न के नाम से जाना जाता है। उनकी पार्टी अकोला बेस्ड है, इसलिए उनकी इस रणनीति को अकोला पैटर्न का नाम तो दिया गया। पिछले लोकसभा चुनाव में प्रकाश आंबेडकर और असदुद्दीन ओवैसी ने मिलकर चुनाव लड़ा था। दोनों ने मिलकर महाराष्ट्र में लगभग 14 प्रतिशत वोट हासिल किए थे। इसकी वजह से इंडिया गठबंधन के दो अहम घटक कांग्रेस और एनसीपी को कई सीटों पर भारी नुकसान उठाना पड़ा था।

चुनाव में भाषा का संयम एवं वचनों की मर्यादा जरूरी

ललित गर्ग

लोकसभा चुनावों जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, कई नेताओं की जुबान फिसलती जा रही है, वे राजनीति से इतर नेताओं की निजी जिंदगियों में तांक-झांक वाले, धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले ऐसे बोल बोल रहे हैं, जो न सिर्फ.आपत्तिजनक हैं, बल्कि राष्ट्र-तोड़क है। चुनावी रैलियों में जनता के सामने अपने प्रतिद्वंद्वी को नीचा दिखाने के मकसद से ये नेता मर्यादा, शालीनता और नैतिकता की रेखाएं पार करते नजर आए हैं। गलत का विरोध खुलकर हो, राष्ट्र-निर्माण के लिये अपनी बात कही जाये, अपने चुनावी मुद्दों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाये, लेकिन गलत, उच्छृंखल एवं अनुशासनहीन बयानों की राजनीति से बचना चाहिए। बड़ा सवाल है कि एक ऊर्जावान एवं दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में क्या वाकई अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल औचित्यपूर्ण है? चुनाव की तारीख तय होने एवं चुनावी पारा बढ़ने के बाद नेताओं के बयानों में तीखापन एवं हल्कापन आ गया है। एक तरफ गर्मी चुभन का अहसास करा रही है, तो दूसरी तरफ राजनीतिक हलकों में भाषायी अभद्रता एवं उच्छृंखलता घाव पर नमक छिड़क रही है। नेताओं को यह बात समझनी चाहिए कि सही तरीके से बोले गए शब्दों में लोगों को जोड़ने की ताकत होती है, जबकि गलत भाषा एवं बोल का इस्तेमाल राजनीतिक धरातल को कमजोर करता है।

नेताओं के बयान शालीनता एवं मर्यादा की सारी सीमाएं लांघ रही है। राहुल गांधी की शक्ति के खिलाफ लड़ाई संबंधी टिप्पणी शक्ति से जुड़े धार्मिक मूल्यों का अपमान करने और कुछ धार्मिक समुदाय के तुष्टीकरण के लिए धर्मों के बीच शत्रुता पैदा करने के दुर्भावनापूर्ण इरादे को दशार्ती है। प्रारंभ में लालूप्रसाद यादव का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर परिवार विषयक आरोप भाजपा के लिये रामबाण औषधि बना है। कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने कंगना रनौत को लेकर किए पोस्ट में एक्ट्रेस की फोटो के साथ भद्दा कमेंट महिला-शक्ति का अपमान बना है। ईवीएम के बारे में राहुल गांधी की टिप्पणी के लिए निर्वाचन आयोग से उनके खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की जा रही है और कहा जा रहा है कि तथ्यों के सत्यापन के बिना इस तरह का दुष्प्रचार और गलत सूचना राष्ट्रीय अखंडता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए नुकसानदायक है। ईवीएम और निर्वाचन आयोग के बारे में भ्रामक टिप्पणी लोक अव्यवस्था पैदा करने के इरादे से की गई हैं। जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव के चरण आगे बढ़ रहे हैं, विवादास्पद बयानों की झड़ी भी लगने लगी। हमारे देश की राजनीति में संयमित भाषा एवं अनुशासित बोल-बयान एक महत्वपूर्ण अंग होती है। लोकतंत्र में उसी नेता का बोल-बाला होता है, जिसकी भाषा एवं वचनों पर पकड़ मजबूत होती है। आजादी के बाद देश में जिस प्रकार राजनीति में बदलाव आता गया, उसी प्रकार राजनेताओं की भाषा और आरोप-प्रत्यारोप की शैली भी बदलती गई। आज कुछ राजनीतिक दलों के नेता अपने विपक्षी राजनेता को पप्पू जैसे शब्दों से ताना मारते हैं, तो कोई विपक्षी नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिये चौकीदार चोर है या चायवाला जैसे शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। क्या हमारे देश की राजनीति में मर्यादा नाम का कोई शब्द बचा है? ऐसी अभद्र भाषा का उपयोग करने से पहले हमारे ये राजनेता जरा भी नहीं सोचते कि उसका उनकी पार्टी पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

भारतीय राजनीति में स्तरहीन, हल्की और सस्ती बातें कहने का चलन काफी समय से है। लेकिन पिछले दो दशकों में यह वीभत्स रूप धारण कर चुका है। उस समय जब राम मनोहर लोहिया ने इंदिरा गांधी को गूंगी गुड़िया कहा था तो काफी विवाद हुआ और बड़ी तादाद में लोगों ने लोहिया का विरोध किया। कांग्रेस के अध्यक्ष खड़गे भी काफी कुछ बोल चुके हैं और उनका पीएम मोदी के लिए रावण वाला बयान काफी चर्चा में रहा है। लेकिन सबसे ज्यादा हल्की बात कहते हैं मणिशंकर अय्यर। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के लिए बहुत ही सस्ते शब्दों का इस्तेमाल किया। उन्होंने तो नीच, कातिल जैसे शब्दों का खुलेआम इस्तेमाल किया था जिसमें उनकी हताशा साफ झलकती है। कड़वे एवं गलत बयानी के मामले में कांग्रेसियों की तो सूची काफी लंबी है। चाहे वह अधीर रंजन हों या दिग्विजय सिंह या फिर संजय निरुपम और प्रियंका गांधी। आम आदमी पार्टी के नेता एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने तो सारी हदें पार कर दी। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने ईवीएम की निंदा चोर के रूप में की थी। सभी ने मौका देखकर बेहद हल्के शब्दों का इस्तेमाल किया, जिससे उनकी खीझ एवं बौखलाहट का पता चलता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि मोदी और उनकी पार्टी ने ऐसे अमर्यादित शब्दों और टिप्पणियों को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने करोड़ों समर्थकों के सामने इन शब्दों और उन्हें बोलने वालों के खिलाफ माहौल बना दिया। नरेन्द्र मोदी को चाय वाला कहकर उनका उपहास उड़ाने वाले विपक्षियों को तो उन्होंने अपने कार्यों और उपलब्धियों से आईना दिखा दिया। आज चाय वाला शब्द मेहनतकश लोगों के सम्मान का प्रतीक बन गया है।

मतदाताओं को आकर्षित एवं अपने पक्ष में करने के फेर में राजनीति को रसातल में धकेलने की मानो होड़ मची हुई है। क्षणिक रोमांच एवं तत्काल चुनावी लाभ के लिए मर्यादा को तार-तार करने वाले इन नेताओं को आत्म-चिंतन की सख्त जरूरत है। मर्यादित भाषा में विभिन्न दलों और नेताओं की आलोचना इस देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था की खूबसूरती है। भाषा की मर्यादा और वाणी में संयम भारत के लोकतंत्र का आधार है। बेलगाम भाषा से क्षणिक प्रचार और सुर्खियां बटोरना सम्भव है लेकिन अतीत में ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जो ये दशार्ते हैं कि ऐसे नेताओं को जनता भी कुछ समय बाद ही भूल जाती है। नेताओं को हर हालत में भाषा की मर्यादा एवं शालीनता को बनाए रखना चाहिए। भले ही चुनाव का वक्त आसमान से तारे तोड़ लाने के वायदे करने का वक्त है और खामियों को दबाने और उपलब्धियों के बखान का वक्त है। लेकिन यह सब करते हुए भाषा की शालीनता एवं कड़वे बोल से बचने की जरूरत है।

यह वक्त मतदाता के जागने एवं विवेक से मतदान करने का भी है। वह अच्छे-बुरे का फर्क करके तार्किक आधार पर अपने बेशकीमती मत का उपयोग करे। विडंबना ही है कि अमृतकाल से गुजरते देश में मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग विष और अमृत के भेद को पूरी तरह महसूस नहीं कर पाया है। नेताओं के गलत, बेबुनियाद एवं तथ्यहीन बयानों कर सत्यता को जाने बिना उन पर विश्वास कर मतदाता लोकतंत्र को कमजोर करता है। भारतीय राजनीति में दागियों का दखल और धनबल का बढ़ता वर्चस्व यही बताता है कि हमारा मतदाता इन संवेदनशील मुद्दों के प्रति जागरूक नहीं हो पाया है। निश्चित रूप से मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो वोट डालने घर से नहीं निकलता। जो बड़ा तबका निकलता भी है वह भी धर्म, जाति, क्षेत्र और धनबल से रचे सम्मोहन से मुक्त नहीं हो पाता।

महिलाओं के विरुद्ध अनर्गल टिप्पणी से आखिर कैसे मिलेगी निजात

कमलेश पांडे

भारतीय राजनीति में महिलाओं के खिलाफ अनर्गल टिप्पणी या बयानबाजी कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब एक सम्भ्रांत महिला दूसरी प्रतिस्पर्धी महिला पर कीचड़ उछाले, अनैतिक कटाक्ष करे...तो किसी का भी चिंतित होना लाजिमी है। सवाल है कि महिलाओं के विरुद्ध अक्सर होने वाली ऐसी अनर्गल टिप्पणी से आखिर कैसे निजात मिलेगी? हाल ही में हिमाचल प्रदेश की मंडी लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी कंगना रनोट और मंडी पर कांग्रेस की सोशल मीडिया प्रमुख सुप्रिया श्रीनेत व गुजरात कांग्रेस के किसान राज्य संयुक्त समन्वयक एच एस अहीर की आपत्तिजनक पोस्ट का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। अब तो राष्ट्रीय महिला आयोग ने भी इसे महिला सम्मान के विरूद्ध बताया और चुनाव आयोग से शिकायत कर तत्काल कार्रवाई की मांग की।

वहीं, हिमाचल प्रदेश भाजपा ने भी चुनाव आयोग से शिकायत की है कि यह अपमानजनक टिप्पणी है, जो इंटरनेट मीडिया पोस्ट के रूप में प्रसारित की गई है। यह किसी महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाली पोस्ट है। यही नहीं, यह आदर्श आचार संहिता के अनिवार्य दिशानिदेर्शों का भी उल्लंघन है। यह सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के साथ भारतीय दंड संहिता के तहत भी अपराध के दायरे में आती हैं। इनकी टिप्पणियां लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत परिभाषित भ्रष्ट आचरण की परिभाषा के अंतर्गत आती हैं।

वहीं, हिमाचल प्रदेश में नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने इसे देवभूमि हिमाचल का अपमान बताते हुए कहा कि सुप्रिया श्रीनेत की टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण है। दरअसल, कंगना को लेकर पूरा विवाद तब खड़ा हुआ, जब मंडी सीट से भाजपा प्रत्याशी कंगना को लेकर कांग्रेस नेत्री सुप्रिया श्रीनेत के इंस्टाग्राम अकाउंट से अभिनेत्री की तस्वीर के साथ एक आपत्तिजनक पोस्ट की गई, जिसमें लिखा हुआ था कि क्या भाव चल रहा है मंडी में, कोई बताएगा?'

यह बात अलग है कि विवाद बढ़ते ही कांग्रेस नेत्री सुप्रिया श्रीनेत ने अपने पोस्ट को हटा दिया और सफाई दी कि "उनके मेटा (इंस्टाग्राम व फेसबुक) अकाउंट का संचालन करने वाले किसी दूसरे व्यक्ति से यह गड़बड़ी हुई है। वह किसी महिला को लेकर ऐसी आपत्तिजनक पोस्ट के बारे में सोच भी नहीं सकतीं। वह उस पैरोडी अकाउंट के विरुद्ध कार्रवाई करेंगी, जो उनके नाम का इस्तेमाल कर रहा है।"

वहीं, सुप्रिया श्रीनेत की पोस्ट के जवाब में कंगना ने कहा कि, "एक कलाकार के रूप में अपने करियर के पिछले 20 वर्षों में मैंने हर तरह की महिलाओं का किरदार निभाया है। हमें अपनी बेटियों को पूर्वाग्रहों के बंधन से मुक्त करना चाहिए। हमें उनके शरीर के अंगों के बारे में जिज्ञासा से ऊपर उठना चाहिए। हर महिला गरिमा और सम्मान की हकदार है।" उधर, सुप्रिया श्रीनेत वाले मामले पर भाजपा नेता अमित मालवीय ने कहा कि "अगर आपके (सुप्रिया श्रीनेत) अकाउंट से वही पोस्ट होती है जो पैरोडी अकाउंट पर पोस्ट होती है तो इसका मतलब है कि दोनों अकाउंट के एडमिन एक ही हैं।" वहीं, तजिंदर बग्गा ने कहा है कि "इन पोस्ट से कांग्रेस का महिला विरोधी चेहरा बेनकाब हुआ है। सुप्रिया श्रीनेत ने कांग्रेस का नेहरूवादी

चेहरा दिखाया है।" वहीं, शहजाद पूनावाला ने भी सुप्रिया श्रीनेत के पोस्ट को शर्मनाक बताया और कहा कि "यह घिनौनेपन से भी आगे है। क्या मल्लिकार्जुन खरगे सुप्रिया श्रीनेत को हटाएंगे? हाथरस वाली लॉबी अब कहाँ है?" वहीं, राष्ट्रीय महिला आयोग ने एक पोस्ट में कहा, 'आयोग सुप्रिया श्रीनेत और एचएस अहीर के अपमानजनक आचरण से स्तब्ध है, जिन्होंने इंटरनेट मीडिया पर कंगना के बारे में अभद्र व अपमानजनक टिप्पणी की। ऐसा व्यवहार असहनीय व महिलाओं की गरिमा के विरुद्ध है। लेकिन सवाल यह है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ भाजपा नेता दिलीप घोष की टिप्पणियों के खिलाफ उसका स्टैंड क्या है? खुद कंगना रनौत का एक पुराना इंटरव्यू वायरल हो रहा है, जिसमें कंगना रनौत बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर को सॉफ्ट पोर्न स्टार कहती हुई सुनी जा रहीं हैं। ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि जिस समाज में इस फूहड़ता की कोई जगह नहीं होनी चाहिए, तो फिर भाजपा और कंगना सेलेक्टिव क्यों है? समय रहते ही स्पष्ट कर दें, तो बेहतर रहेगा। क्योंकि एक तरफ तो कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने मंगलवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में दो टूक कहा, सार्वजनिक चर्चा में ऐसी भाषा के लिए कोई जगह नहीं है और कांग्रेस का रुख इस मामले में हमेशा स्पष्ट रहा है। जबकि सुप्रिया श्रीनेत ने कहा है कि जिसने भी यह किया है, यह एक गलती है। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है और मामले को यहीं खत्म हो जाना चाहिए। वहीं, दूसरी ओर बंगाल में भाजपा के वरिष्ठ नेता और सांसद दिलीप घोष को एक वीडियो क्लिप में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि का मजाक उड़ाते हुए देखे जाने के बाद गत दिनों विवाद खड़ा हो गया। इस मामले में तृणमूल कांग्रेस ने कहा कि दिलीप घोष की यह टिप्पणी 'भाजपा के डीएनए' को दशार्ती है। साथ ही 'एक्स' पर क्लिप साझा करते हुए पत्र लिखकर केंद्रीय चुनाव आयोग से इसकी शिकायत कर कार्रवाई की मांग की।

वहीं, आयोग ने बर्द्धमान-दुर्गापुर सीट से भाजपा उम्मीदवार घोष की टिप्पणी को लेकर जिलाधिकारी से रिपोर्ट मांगी है। हालांकि, वायरल हुई इस वीडियो क्लिप की प्रामाणिकता की पुष्टि होनी अभी बाकी है। बता दें कि भाजपा की बंगाल इकाई के पूर्व अध्यक्ष दिलीप घोष को तृणमूल के चुनावी नारे 'बांग्ला निजेर मेयेके चाई' (बंगाल अपनी बेटी चाहता है) का मजाक उड़ाते हुए देखा जा सकता है। उन्होंने कहा, जब वह (ममता) त्रिपुरा जाती हैं तो कहती हैं कि वह त्रिपुरा की बेटी हैं। जब वह बंगाल में होती हैं तो कहती हैं कि बंगाल की बेटी हैं। इसलिए पहले उन्हें स्पष्ट करने दीजिए, उनके पिता कौन हैं? गौरतलब है कि मेदिनीपुर लोकसभा सीट से मौजूदा सांसद घोष तृणमूल के 2021 के चुनाव नारे 'बांग्ला निजेर मेयेके चाई' का जिक्र कर रहे थे। उनकी इस टिप्पणी पर बंगाल की महिला एवं बाल विकास मंत्री शशि पांजा ने कहा कि इस टिप्पणी पर उन्हें तुरंत माफी मांगनी चाहिए। वहीं, इस मुद्दे पर राष्ट्रीय महिला आयोग की खामोशी भी समझ से परे है। लोग पूछ रहे हैं कि बिलकिश बानो के दोषियों की रिहाई पर जिनका मुंह नहीं खुला, पहलवान बेटियों की दुर्दशा और दयनीय हालात पर जिनका मुंह नहीं खुला, मणिपुर की उस दुखद और अमानवीय घटना पर जिनका मुंह नहीं खुला, नेहा सिंह राठौर को मियां खलीफा से कंपेयर करने वालों पर जिनका मुंह नहीं खुला, वो अब कह रहे हैं कि सुप्रिया श्रीनेत ने कंगना रनौत का अपमान किया है, जबकि सुप्रिया श्रीनेत ने पहले ही उस पोस्ट को डिलीट कर दिया है और बता भी दिया है कि यह उनकी सोशल मीडिया टीम की गलती थी। बावजूद इसके बीजेपी ने कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत को तुरंत बर्खास्त करने की मांग की है। सवाल फिर यही कि महिलाओं के विरुद्ध अनर्गल टिप्पणी के मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग जैसी संस्थाएं पिक एंड चूज का रवैया अपनाएंगी तो फिर इस शर्मनाक सियासी प्रवृत्ति से निजात आखिर कैसे मिलेगी? यही नहीं, भाजपा और कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियां भी पिक एंड चूज करके बयानबाजी करेंगी, तो फिर महिलाओं से जुड़े इस ज्वलंत सवाल का क्या होगा, जिस पर चुनाव आयोग से और राजनीतिक दलों से एक स्पष्ट और सर्वमान्य दृष्टिकोण की अपेक्षा की जाती है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो सियासत गर्त में चली जायेगी और उदंडता का महिमामंडन हर ओर होगा, जैसा कि आजाद भारत में एक सियासी परंपरा बन चुकी है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने नोडल अधिकारियों के साथ की बैठक

बलिया। भारत निर्वाचन आयोग की मंशा के अनुरूप आगामी लोक सभा सामान्य निर्वाचन-2024 को स्वतंत्र, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण और सुचारू रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी रवींद्र कुमार ने समस्त नोडल अधिकारियों के साथ बैठक कर समस्त तैयारियों को ससमय पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी ने समस्त नोडल अधिकारियों से कहा सभी नोडल अधिकारी भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी की गई गाइडलाइन के अनुरूप ही अपने से संबंधित प्रकोष्ठ के कार्यों की कार्य योजना निर्धारित समय के अनुसार तैयार करते हुए उसे अंतिम रूप प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि निर्वाचन कार्य में किसी भी प्रकार की उदासीनता/शिथिलता को बहुत ही गंभीरता से लिया जाएगा। सभी नोडल अधिकारी अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे, ताकि जनपद में आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 को स्वतंत्र निष्पक्ष शांतिपूर्ण एवं सुचारु रूप से संपन्न कराया जा सके। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि समस्त नोडल अधिकारी चुनाव के दौरान प्राप्त होने वाले निदेशों का शत शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करेंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी ने मैनपावर मैनेजमेंट, ट्रांसपोर्ट, मतदान एवं मतगणना कार्मिकों के प्रशिक्षण, एम.सी.एम.सी., निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण, स्वीप, कंट्रोल रूम, ईवीएम मैनेजमेंट, मॉडल बूथ, मीडिया एवं सोशल मीडिया, मतदेय स्थलों पर विवरण का अंकन/मतदेय स्थलों पर पोलिंग पार्टी की व्यवस्था आदि का प्रबंधन सहित अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में नोडल अधिकारियों को निर्वाचन संबंधी सभी तैयारियां भारत निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन के अनुरूप समय रहते पूर्ण करने के निर्देश दिये। इस बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ओजस्वी राज, एडीएम डीपी सिंह, सीआरओ त्रिभुवन, सिटी मजिस्ट्रेट इंद्रकांत द्विवेदी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

बाबा कीनाराम मठ में दर्शन के दौरान भक्त भोला की हुई मौत

चहनियां। चंदौली। क्षेत्र के बाबा कीनाराम मठ रामगढ़ में दर्शन पूजन करने आये गाजीपुर जिले डहन ग्राम निवासी भोला सिंह का मंगलवार दोपहर दो बजे मंदिर में दर्शन पूजन करते समय अचानक दिल का दौड़ा पड़ने से मौत हो गयी । भोला सिंह प्रति मंगलवार व रविवार को बाबा के चरणों मे आकर शीश नवाते थे। रामगढ़ गांव निवासी डॉ0अवधेश सिंह ने बताया कि भोला सिंह शादी के कई वर्षों तक पिता नही बन पाए थे । एक दिन वो बाबा कीनाराम जी के मठ में आकर बाबा कीनाराम जी के तपासन के सामने जोर जोर से रोने लगे । तत्कालीन महंत ने उनके पीठ पर आशीर्वाद स्वरूप थपकी देते हुए भभूत दी । कुछ ही वर्षो में भोला को एक एक करके दो पुत्र पैदा हुए ।तब से भोला सिंह को बाबा में अपार श्रद्धा भाव था। भोला सिंह अनवरत रविवार व मंगलवार को बाबा के दरवार में मत्था टेकते थे । मंगलवार को बाबा के तपासन के ठीक सामने दर्शन पूजन के दौरान अचानक दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गयी । उनके रामगढ़ के सैकड़ो चाहने वालो व उनके परिजनों में शोक की लहर दौड़ गयी। इस दौरान रामगढ़ युवा अध्यक्ष उमेश सिंह,रमेश सिंह, प्रभुनाथ पाण्डेय,पीयूष कुमार जय सिंह,,डॉ बंगाली , मुकेश साहनी, अशोक कुशवाहा दीपक, किशन चौरसिया के द्वारा मठ प्रांगण से उनको अंतिम विदाई देकर गाजीपुर के लिए रवाना किया गया।

मझवार रेलवे स्टेशन चन्दौली के पास से एक महिला व 3 पुरूष अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

चंदौली। उप निरीक्षक शिव बाबू यादव कस्बा चौकी इंचार्ज चंदौली व कांस्टेबल विजय कुमार कस्बा चौकी चंदौली पर मौजूद थे कि चंदा पत्नी स्व. प्रदीप निवासी-छोटी मलदहिया पिपलानी कटरा थाना चेतगंज जनपद कमिश्नरेट वाराणसी की पुत्री चांदनी को डोमन बस्ती के अर्जुन पुत्र सिपाही के द्वारा भगाकर ले आने के कारण दोनों पक्ष पुलिस चौकी के पास आपस में लड़ झगड़ रहे थे, जिसकी मौखिक सूचना प्राप्त होने पर दोनों पक्षों को पुलिस चौकी पर बुलाया गया तथा समझाने का प्रयास किया गया। वहां मौजूद बाबू पुत्र दरोगा के द्वारा पुनः दूसरे पक्ष के साथ मारपीट की जाने लगी जिसे रोकने व समझाने का प्रयास किया गया तो बाबू पुत्र दरोगा, लाल बाबू पुत्र दरोगा,-दरोगा पुत्र स्वर्गीय जगजीवन, सिपाही पुत्र स्वर्गीय जगजीवन,मीरा पत्नी दरोगा

निवासीगण डोमन बस्ती नियर पुलिस चौकी कस्बा चंदौली उत्तेजित हो गए तथा कांस्टेबल विजय कुमार से अभद्रता करते हुए मारपीट करने लगे। जिससे कांस्टेबल विजय को भी चोटें आई हैं। बीच बचाव करने पहुंचे चौकी इंचार्ज से भी दुर्व्यवहार किया गया। चौकी के बाहर रखी कुर्सियों को तोड़ने लगे जिससे चौकी के आसपास मौजूद दुकानदार लोगों में अफरा तफरी मच गई आसपास की दुकान बंद होने लगी इन लोगों के साथ में 4-5 अन्य लोग भी थे जिनका नाम पता मालूम नहीं है उनके इन कार्यों से सरकारी कार्यों में बाधा उत्पन्न हुई. कोतवाली से पुलिस बल बुलाकर शांति व्यवस्था बनाने का प्रयास किया गया. सभी आरोपी भाग गए। उपरोक्त घटना की सूचना पर थाना स्थानीय पर मु.अ.स. 63/24 धारा 147/504/323/427/332/352 भा0द0वि0 व धारा 7 अपराधिक कानून संशोधन अधिनियम 1932 थाना चंदौली पर पंजीकृत कर कार्रवाई प्रचलित की गयी।

खण्डवारी देवी इंटर कालेज में प्रवेश प्रारम्भ

चहनियां। चंदौली। चहनियां स्थित खण्डवारी देवी इंटर कालेज में कक्षा 1 से 12 तक की प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। चहनियां स्थित खण्डवारी देवी इंटर कालेज जनपद का जाना माना विद्यालय है । जहाँ पर कला व विज्ञान के साथ साथ वाणिज्य ,कृषि तथा व्यवसायिक की भी शिक्षा दी जाती है । खेलकूद व सांस्कृतिक में जनपद से लेकर अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपना अलग स्थान रखता है । कई छात्र छात्राये राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर पदक पा चुके है । कम फीस में गुणवत्ता परक शिक्षा प्राप्त करने के लिए खण्डवारी देवी इंटर कालेज का नाम पूरे क्षेत्र में प्रचलित है । कालेज के प्रधानाचार्य डॉ0 आशुतोष कुमार सिंह कैलाशी ने बताया कि विद्यालय में प्रवेश के लिए बच्चो की भीड़ लग रही है ।

अबीर गुलाल लगाकर लोगों ने दिया एक दुसरे को बधाई

चकिया। चंदौली। बहेलिया समाज के लोगों ने पंचायत भवन मगरौर में बुधवार को होली का पर्व हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से मनाया। मगरौर गांव स्थित पंचायत भवन पर प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी बहेलिया समाज के लोगों द्वारा होली पर्व पर बुधवार को होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में लोग पहुंचकर एक दुसरे को अबीर गुलाल लगाकर गले मिले और बधाई दिये । बता दें कि जनपद सहित क्षेत्र के चकिया, शहाबगंज, शिकारगंज, सिकंदरपुर, नौगढ़, इलिया कस्बा सहित गांवों व बजारों से आये बहेलिया समाज के लोग एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर बधाई दिया। मुख्य अतिथि बहेलिया समाज के अध्यक्ष धीरज बहेलिया ने कहा कि होली त्योहार प्रेम सौहार्द का त्यौहार है । जिसे द्वेष भावना को भुलाकर एक दूसरे को लोग अबीर गुलाल लगाकर गले मिलना चाहिए है । जहां शिक्षा वहीं

विकास है । शिक्षा के बिना विकास संभव नहीं। शिक्षा से ही एक समाज बनता है जहां लोगों को आदर और सम्मान मिलता है । इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष शहाबगंज रिंकु विश्वकर्मा, अभिषेक बहेलिया, बंधु बहेलिया,मोहन बहेलिया, अवधेश बहेलिया ,राजनाथ बहेलिया,घुरहू बहेलिया, विजई बहेलिया ,वीरबल बहेलिया , अलियार बहेलिया ,रघुवर बहेलिया ,लल्लन प्रसाद बहेलिया, सुरेश बहेलिया , चंद्रप्रकाश बहेलिया सहित बहेलिया समाज के काफी लोग मौजूद रहे । कार्यक्रम की अध्यक्षता रामधिरज बहेलिया तथा , संचालन सुरेश बहेलिया द्वारा किया गया ।

चहनियां फील्ड पर हाईमास्ट लाइट लगाने की मांग किया

चहनियां। चंदौली। चहनियां स्थित खण्डवारी देवी इंटर कालेज के फील्ड पर ग्रामीणों ने दो हाईमास्ट लगवाने की मांग किया । इस फील्ड पर प्रतिदिन सैकड़ो बच्चे खेलकूद की तैयारी करने आते है । हाईमास्ट लगाने के प्रधानपति सतीश गुप्ता ने केंद्रीय मंत्री को पत्रक भी दिया है। चहनियां स्थित खण्डवारी देवी इंटर कालेज फील्ड पर प्रतिदिन सैकड़ो बच्चे भोर में शाम को खेलकूद की तैयारी करने आते है । कस्बा के लोग टहलने भी आते है । चहनियां में खेलकूद या फिर कोई कार्यक्रम कराने के लिए कोई जगह नही थी । मां खण्डवारी ग्रुप ऑफ कॉलेजेज के संस्थापक प्रबन्धक डॉ0 राजेन्द्र प्रताप सिंह ने कस्बावासियों को फील्ड का तोहफा दिया । जहां सुबह शाम लोग आते है । किंतु भोर व शाम को अंधेरा हो जाता है । ग्रामीणों द्वारा यहां हाईमास्ट लाइट लगाने के लिए पहले भी केंद्रीय मंत्री डॉ0 महेंद्र नाथ पाण्डेय से गुहार लगा चुके है । प्रधानपति सतीश गुप्ता ने बताया कि यहां फील्ड पर दो हाईमास्ट लाइट लगाने के लिए केंद्रीय मंत्री को पत्रक दिया गया है ।

सी-विजिल एप से आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन की करें शिकायत : जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी

चंदौली। जिला निर्वाचन अधिकारी निखिल टी. फुंडे ने बताया कि सी-विजिल एप के माध्यम से आम नागरिक आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन की शिकायत कर सकते हैं।

मोबाइल से प्ले स्टोर या एप स्टोर से सी-विजिल एप डाउनलोड कर आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन की शिकायत, लाइव फोटो अथवा लाइव वीडियो अपलोड कर शिकायत की जा सकती है।

शिकायत की निगरानी कैसे करें ? आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन होने पर सी-विजिल एप में अपने मोबाइल नम्बर से लॉगिन करके नागरिक अपने शिकायत की सतत निगरानी भी कर सकता है।

क्या नाम और मोबाइल नंबर देना अनिवार्य है? सी-विजिल एप पर शिकायत करने हेतु नाम व मोबाइल नम्बर की कोई बाध्यता नहीं है, परन्तु अगर शिकायतकर्ता द्वारा अपना नाम व मोबाइल नम्बर देता है तो शिकायतकर्ता एप के माध्यम से अपनी शिकायत की निगरानी भी कर सकता है। शिकायत निवारण की प्रक्रिया शिकायत निस्तारण की नियत समयावधि 100 मिनट है।

शिकायत दर्ज होने पर सम्बन्धित रिटर्निंग आफिसर द्वारा अपने नजदीक के उड़नदस्ता टीम (एफएसटी) को शिकायत स्थल पर भेजा जाता है।

शिकायत को निर्धारित करके सम्बन्धित रिटर्निंग आफिसर के पोर्टल पर अग्रसारित किया जाता है तथा सम्बन्धित रिटर्निंग आफिसर द्वारा शिकायत के निस्तारण के क्रम में निर्णय लिया जाता है।

सी-विजिल एप में दर्ज होने वाली शिकायत आम तौर पर सी-विजिल एप में धनराशि वितरण, गिफ्ट / कूपन वितरण, शराब वितरण आदि शिकायतों के अतिरिक्त बिना अनुमति पोस्टर, बैनर लगाना, बिना अनुमति बैठक करना, बिना अनुमति के प्रचार में गाड़ी लगाना, धार्मिक तथा उन्मादी भाषणबाजी करने सम्बन्धी परिवाद अंकित किये जाते है।

पावर ऑफ अटर्नी के आधार पर अभियुक्त ने कर दिया जमीन का बैनामा

चंदौली। पुलिस अधीक्षक चन्दौली डा. अनिल कुमार के निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक विनय कुमार सिह एवं क्षेत्राधिकारी पीडीडीयू नगर अनिरूद्ध सिंह के कुशल पर्यवेक्षण में मुगलसराय पुलिस टीम द्वारा कूट रचित व फर्जी दस्तावेज का इस्तेमाल कर भूखंड विक्रय करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार किया गया है। वादीनी आशा केसरवानी पत्नी नंदलाल केसरवानी द्वारा ग्राम मढ़िया में स्थित एक भूखंड का बैनामा रजिस्ट्रार कार्यालय चंदौली में विक्रेता दीपक श्रीवास्तव पुत्र स्वर्गीय विनोद प्रसाद निवासी ग्राम मडिया थाना मुगलसराय चंदौली मूल निवासी मोहल्ला कामेश्वर महादेव जनपद वाराणसी से बजरिया मुख्तारनामा श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी विनोद प्रसाद से किया जो रजिस्ट्रार कार्यालय चंदौली में दर्ज हुआ।

जब क्रेता आशा केसरवानी द्वारा क्रय की गई आराजी पर कब्जा करने का प्रयास किया गया तो पाया गया कि उक्त आराजी पर अखिलेश राय पुत्र मिथिलेश राय काबिल दाखिल है। जिसके पश्चात वादिनी मुकदमा द्वारा माननीय न्यायालय के समक्ष धारा 156 (3) सीआरपीसी के तहत वाद दाखिल कर अभियोग पंजीकृत किए जाने का आदेश पारित कराया गया तथा माननीय न्यायालय के आदेश के अनुपालन में अभियोग थाना मुगलसराय पर पंजीकृत हुआ।

विवेचना के दौरान मुख्य तथ्य यह पाया गया कि जिस आराजी नंबर को वादिनी मुकदमा द्वारा दीपक श्रीवास्तव पुत्र विनोद प्रसाद से बजरिया मुख्तारनामा पावर आफ एटर्नी उर्मिला देवी पत्नी विनोद प्रसाद के द्वारा रजिस्टर्ड बैनामा लिया गया था। उक्त आराजी 25.02.2021 के पूर्व से तथा आज तक सुशीला देवी पत्नी बाबूलाल विश्वकर्मा निवासी मढिया के नाम खसरा खतौनी में दर्ज है। तथा उस पर वह मकान बनाकर काबिज दाखिल है।

उक्त आराजी 232/2 को सुशीला देवी पत्नी बाबूलाल द्वारा जद्दू व जदुनंदन पुत्रगण पदारथ निवासी ग्राम मढ़िया से पूर्व में ही क्रय किया था। इस प्रकार उर्मिला देवी पत्नी विनोद प्रसाद द्वारा अपने लड़के दीपक श्रीवास्तव पुत्र विनोद प्रसाद को किया गया मुख्तारनामा फर्जी था तथा उक्त जमीन संपत्ति उसके नाम नहीं थी। इसके साथ ही यह भी तथ्य पाया गया है कि उर्मिला देवी पत्नी विनोद प्रसाद द्वारा वर्ष 1986 में आराजी नंबर 232/2 मैं एक बिस्सा जमीन जददू व जदुनंदन पुत्र पदाराथ निवासी ग्राम मढ़िया थाना मुगलसराय चंदौली से खरीदा था तथा रजिस्टर्ड बैनामा लिया था। जिसके पश्चात कुछ वर्षों बाद उक्त आराजी पर राजस्व अभिलेखों में 232/2/1 अंकित हुआ। जिसके पश्चात उर्मिला देवी पत्नी विनोद प्रसाद द्वारा उक्त जमीन में से आधा बिस्वा बाबूलाल पुत्र झगडू गुप्ता निवासी महाबलपुर दुल्हीपुर चंदौली तथा सुनीता देवी पत्नी गौतम कुमार निवासी सकलडीहा को रजिस्टर्ड बैनामा कर दिया । जो खसरा खतौनी में बाबूलाल पुत्र झगडू गुप्ता एवं सुनीता देवी पत्नी गौतम कुमार के नाम दर्ज है। तथा उस पर बाबूलाल व सुनीता देवी कमरा बनाकर वर्तमान समय में किराए पर दिए हैं और उस पर उनका कब्जा दखल है। उक्त सभी जानकारी होने के बावजूद उर्मिला देवी पत्नी विनोद प्रसाद द्वारा अपने लड़के दीपक श्रीवास्तव पुत्र विनोद प्रसाद श्रीवास्तव को अपने नाम की आराजी नंबर232/2/1 का मुख्तारनामा पावर ऑफ अटर्नी ना लिखकर आराजी नंबर 232/2 की पावर ऑफ अटर्नी दी गई जिसके आधार पर दीपक श्रीवास्तव द्वारा यही आराजी 232/2ही वादनी आशा केसरवानी पत्नी नंदलाल केसरवानी को रजिस्टर्ड बैनामा किया गया। इस प्रकार अभियोग में वादिनी मुकदमा आशा केसरवानी पत्नी नंदलाल केसरवानी के साथ घटना उर्मिला देवी पत्नी स्वर्गीय विनोद प्रसाद तथा उनके लड़के दीपक श्रीवास्तव पुत्र विनोद प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा किया जाना पाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य किसी आरोपी जो प्रथम सूचना रिपोर्ट में नामित हैं के विरूद्ध प्रथम दृष्टया कोई साक्ष्य अभी तक नहीं पाए जा रहे हैं। मुख्य तथ्य भी अवगत कराना है कि श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी स्वर्गीय विनोद प्रसाद द्वारा अपने आराजी नंबर 232/2/1 मैं बाबूलाल व सुनीता देवी को बेचने के पश्चात बचे हुए आधा भाग को सोनी देवी पत्नी वीरेंद्र यादव को दिनांक 22 .02.22 को बख्शीश नामा के रूप में दे दिया गया जो सोनी देवी पत्नी वीरेंद्र के नाम खारिज दाखिल होकर खसरा खतौनी में भी अंकित हुई। जिसके कुछ दिनों पश्चात सोनी देवी पत्नी वीरेंद्र यादव ने उक्त आराजी नंबर 232/2/1 को अखिलेश कुमार राय पुत्र मिथिलेश राय निवासी ग्राम मढ़िया को रजिस्टर्ड बैनामा कर दिया जो अखिलेश राय पुत्र मिथिलेश राय के नाम खारिज दाखिल होकर खसरा खतौनी में अंकित हुआ।

संक्षिप्त खबरें

लोकसभा चुनावों के दृष्टिगत डीएम व एसपी ने किया निरीक्षण, मतदान के लिए किया जागरूक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गुरुवार को आगामी लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत जिलाधिकारी आर्यका अखौरी एवं पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह द्वारा जनपद गाजीपुर के विभिन्न थाना क्षेत्र में जाकर संवेदनशील व अतिसंवेदनशील बूथों को चेक किया गया तथा वहां मौजूद आमजनमानस से संवाद करते हुए आगामी लोकसभा चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करने हेतु जागरूक किया गया। अधिकारी द्वय द्वारा थाना दिलदारनगर क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय रकसहा, प्राथमिक विधालय उसिया, कंपोजिट स्कूल मिर्चा पर मौजूद लोगों से संवाद किया गया। तत्पश्चात थाना दिलदार नगर क्षेत्रांतर्गत ग्राम रकसहा में केंद्रीय बल सीआईएसएफ के अधिकारियों तथा जवानों एवं पुलिस बल के साथ एरिया डोमिनेशन/पैदल गस्त किया गया। इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण, क्षेत्राधिकारी जमानिया, एसडीएम जमानिया व सेवराई, प्रभारी निरीक्षक जमानिया/दिलदारनगर तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

रविवार से लापता युवक का पोखरे में मिला शव, परिजनों को हत्या की आशंका

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। सदर थाना कोतवाली क्षेत्र के फुल्लनपुर बहरमियां गांव के अंतिम छोर पर पोखरे में एक युवक का शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिला। स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से शव को बाहर निकाला गया, शव के पास मिले मोबाइल के सिम से उसकी शिनाख्त गौरव बिंद पुत्र स्वर्गीय राम निवास बिंद के नाम से हुई। मौके पर मौजूद परिजनों और ग्रामीणों ने बताया कि होली के एक दिन पूर्व होलिका वाले दिन से ही गौरव लापता था, जिसकी सूचना पुलिस के साथ आस पड़ोस, परिचित, दोस्त और रिश्तेदारों से भी की जा रही थी, मृतक गौरव के रिश्ते में चाचा ने दुखी मन से बताया कि उनके बड़े भाई स्व0 राम निवास बिंद की मौत हो चुकी है, परिवार में यही एक बेटा गौरव जिसकी उम्र 20 - 21 वर्ष की है, और इसकी मां के अलावा कोई नहीं है। उन्होंने बताया कि पोखरे में शव मिलने की सूचना पर हम लोग गए और उसे निकलवाए तो सूजन की वजह से पहचान नहीं हो पा रही थी लेकिन मोबाइल के सिम से पहचान गौरव बिंद के रूप में हुई है, उन्होंने बताया कि उसके मुंह से खून आया हुआ है हमें शक है कि उसे मार कर पोखरे में फेंका गया है। फिलहाल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भेज दिया है। इस घटना की सूचना के बाद गांव में कोहराम मचा हुआ है और मृतक के घर उसकी मां और रिश्तेदारों का रो रो कर बुरा हाल है।

आपदाओ से बचने के लिए कलेक्ट्रेट परिसर में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से किया गया जागरूक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की उपस्थिति मे कलेक्ट्रेट परिसर में जनमानस को आपदाओं से बचने के लिए नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया। नुक्कड़ नाटक में सर्पदंश, आंधी, तूफान, लू प्रकोप, आकाशीय विद्युत एवं अन्य आपदाओं पर व्यावहारिक रूप से जनमानस को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम कराए जाने का मुख्य उद्देश्य है कि जनपद में हो रही सर्पदंश, आकाशीय विद्युत से मौतों को कम करना है। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह, अपर जिला अधिकारी वि/रा, अपर जिला अधिकारी भू - राजस्व, उप जिलाधिकारी तथा कलेक्ट्रेट के समस्त कर्मचारीगण, कलेक्ट्रेट में उपस्थित समस्त अधिवक्तागण, कलेक्ट्रेट में उपस्थित आम जनमानस, अन्य विभाग के अधिकारी एवं आपदा विशेषज्ञ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आपदा विशेषज्ञ द्वारा किया गया।

27 मार्च विश्व सुगम्यता दिवस हो घोषित जागरूकता कार्यशाला का आयोजन : मानव रक्त फाउण्डेशन

प्रखर वाराणसी। स्वयं, एक अग्रणी संगठन, जो सभी के लिए सुगम्यता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, स्वयं एवं मानव रक्त फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में श्री राम राज विद्यालय वाराणसी में सुगाम्य भारत अभियान को लेकर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजकीय महाविद्यालय चकिया के प्रोफेसर डॉक्टर शमशेर बहादुर जी व कीन्नर समुदाय गुलिस्ता एकता किन्नर ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष सलमा चौधरी जी की उपस्थिति रही है स्वयं के प्रवक्ता के अनुसार, 2023 में स्वयं ने 27 मार्च को "विश्व सुगम्यता दिवस" के रूप में मान्यता और उत्सव को मजबूत करने की उम्मीद के साथ स्वयं ने अपना दूसरा वार्षिक उत्सव सुगम्यता जागरूक पखवाड़ा अभियान शुरू किया। मानव रक्त फाउंडेशन के अध्यक्ष अधिवक्ता अबू हासिम ने 27 मार्च को विश्व सुगम्यता दिवस के रूप में घोषित स्वयं की घोषणा का समर्थन करने का संकल्प लिया। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम में शामिल एक सौ से अधिक लोग और अन्य अधिकारियों ने भी अपना समर्थन देने का वादा किया। सुगम्यता केवल एक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक मौलिक अधिकार हो, जो सभी व्यक्तियों के लिए उनकी शारीरिक क्षमताओं की परवाह किए बिना इनक्लूसिविटी और समान अवसर सुनिश्चित करता हो। सुगमय दिवस की घोषणा के लिए इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, रेड क्रॉस, पैरालिपिक कमिटी भारत, डीसीसीआई, एवम एनडीएफडीसी भी कर रहे हैं .देव एक्सल फाउंडेशन के अध्यक्ष विनय सिंह के सहयोग से छात्रों को जूस,पेस्ट, ग्लूकोज आदि समान का वितरि भी किया गया।वही संरक्षक लालमोहन, प्रधानाध्यापक प्रीति पटेल, प्रबंधक शिवमोहन जी,सलमा किन्नर, एवं अन्य गणमान्य पदाधिकारीगण मौजूद थे।

थाईलैंड में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता

बैंकाक। निचले सदन में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने वाला बिल पारित होने के बाद थाईलैंड ने विवाह समानता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। कानून बनने के लिए इसे अभी भी सीनेट से अनुमोदन और शाही समर्थन की आवश्यकता है, लेकिन यह व्यापक रूप से 2024 के अंत तक लागू होने की उम्मीद है, जिससे थाईलैंड समलैंगिक संघों को मान्यता देने वाला एकमात्र दक्षिण पूर्व एशियाई देश बन जाएगा।

ईडी ने फेमा उल्लंघन में महुआ मोइत्रा को तीसरा समन भेजा

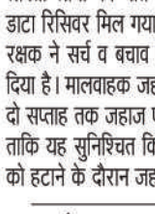

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) उल्लंघन मामले में पूछताछ के लिए तृणमूल कांग्रेस नेता महुआ मोइत्रा को तीसरा समन जारी किया है। सूत्रों के अनुसार, महुआ मोइत्रा को गुरुवार (28 मार्च) को दिल्ली स्थित ईडी मुख्यालय में अधिकारियों के सामने पेश होने के लिए कहा गया है।

सऊदी अरब पहली बार ले रहा मिस यूनिवर्स में हिस्सा

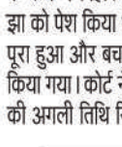

रियाद। इस्लामिक देश सऊदी अरब जो कभी कट्टरता के लिए दुनिया भर में बदनाम था, मोहम्मद बिन सलमान अल के राज में अपनी छवि सुधार रहा है। सऊदी अरब आधिकारिक तौर पर मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहा है। 27 साल की खूबसूरत मॉडल रूमी अलकाहतानी देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

बॉल्टीमोर में ब्रिज गिरने से लापता छह लोग मृत घोषित

वाशिंगटन। बॉल्टीमोर में ब्रिज गिरने के कारण लापता हुए छह लोगों को मृत घोषित कर दिया गया है। रियर एडमिरल शैनन गिलरेथ ने कहा कि ठंडे पानी और समुद्र की कठोर परिस्थितियों के कारण संभावना है कि लापता लोगों की मौत हो गई है। जहाज का डाटा रिसिवर मिल गया है। अब अमेरिकी तट रक्षक ने सर्च व बचाव प्रयासों को समाप्त कर दिया है। मालवाहक जहाज के चालक दल को दो सप्ताह तक जहाज पर रहने की उम्मीद है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मलबे को हटाने के दौरान जहाज डूब न जाए।

चारा घोटाला मामले में 89वें गवाह का बयान कलमबंद

पटना। बिहार के बहुचर्चित करोड़ों रुपये के चारा घोटाला से जुड़े एक मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने बुधवार को विशेष कोर्ट में अपने 89वें गवाह का बयान कलमबंद करवाया। चारा घोटाला मामलों की सुनवाई कर रही विशेष कोर्ट के जज महेश कुमार की अदालत में सीबीआई ने 89वें गवाह के रूप में बिहार विस के पूर्व अधिकारी फूल झा को पेश किया था। गवाह का मुख्य परीक्षण पूरा हुआ और बचाव पक्ष के द्वारा प्रति परीक्षण किया गया। कोर्ट ने मामले में 03 अप्रैल 2024 की अगली तिथि निश्चित की है।

जस्टिस अवस्थी ने लोकपाल के न्यायिक सदस्य की शपथ ली

नई दिल्ली। जस्टिस रितु राज अवस्थी ने बुधवार को यहां लोकपाल के न्यायिक सदस्य के रूप में शपथ ली। लोकपाल अध्यक्ष न्यायमूर्ति ए. एम. खानविलकर ने उन्हें शपथ दिलाई। भारतीय लोकपाल कार्यालय में आयोजित समारोह में पंकज कुमार और अजय तिर्की ने लोकपाल सदस्य के रूप में शपथ ली। नई नियुक्तियाँ दो मौजूदा न्यायिक सदस्यों जस्टिस पीके मोहंती, जस्टिस अभिलाषा कुमारी एवं तीन सदस्यों डीके जैन, अर्चना रामसुंदरम और महेंद्र सिंह का 26 मार्च को लोकपाल में कार्यकाल पूरा होने के बाद की गई हैं।

होली एक्सप्रेस बनी द बर्निंग ट्रेन

बिहार के आरा में बड़ा हादसा होते-होते बचा। लोकमान्य तिलक ट्रेन में बुधवार को भयानक आग लग गई, कई लोगों ने बोगी से कूदकर जान बचाई।

पीएसएलवी ने पूरा किया शून्य मलबा मिशन इसरो ने एक और मील का पत्थर हासिल किया

● चेन्नई/

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने उस समय एक और मील का पत्थर हासिल किया है, जब पीएसएलवी ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल-3 (पीओईएम-3) ने पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश करके शून्य कक्षीय मलबा मिशन को पूरा किया।

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने बताया है कि पीएसएलवी-सी58 /एक्सपीओसैट मिशन ने व्यावहारिक रूप से कक्षा में शून्य मलबा छोड़ा है।

उल्लेखनीय है कि पीएसएलवी-सी 58 मिशन को सभी उपग्रहों को उनकी वांछित कक्षाओं में स्थापित करने के प्राथमिक मिशन को पूरा करने के बाद 01 जनवरी, 2024 को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया था। पीएसएलवी के पीएसएलवी के टर्मिनल चरण को 3-अक्ष स्थिर मंच, पीओईएम-3 में बदल दिया गया है। इसे 650 किलोमीटर की ऊंचाई से 350 किमी तक डी-ऑर्बिट किया गया था, जिससे इसके शीघ्र पुनः प्रवेश की सुविधा मिली, और किसी भी आकस्मिक ब्रेक-अप जोखिम को कम करने के लिए अवशिष्ट प्रणोदकों को हटाने के लिए निष्क्रिय किया गया था।

इसरो के मुताबिक नव विकसित स्वदेशी प्रणालियों पर प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और वैज्ञानिक प्रयोग करने के लिए पीओईएम-3 को कुल नौ विभिन्न प्रयोगात्मक पेलोड के साथ कॉन्फिगर किया गया था। इनमें से छह पेलोड एनजीई द्वारा इन-स्पेस के माध्यम से वितरित किए गए थे।

खड़गे बोले-डरावना है देश में बेरोजगारी का आंकड़ा

केंद्र की उदासीनता का खामियाजा भुगत रहा है हमारे देश का युवा

कहा, हम बेरोजगारी के टिक टिक बम पर बैठे हैं

● नई दिल्ली

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने बेरोजगारी के ताजा आंकड़े को डरावना करार देते हुए बुधवार को कहा कि देश का युवा मोदी सरकार की उदासीनता का खामियाजा भुगत रहा है। खड़गे ने कहा, 'हमारे युवा मोदी सरकार की दयनीय उदासीनता का खामियाजा भुगत रहे हैं, क्योंकि लगातार बढ़ती बेरोजगारी ने उनका भविष्य बर्बाद कर दिया है। आईएलओ और आईएचडी रिपोर्ट निर्णायक रूप से कहती है कि भारत में बेरोजगारी की समस्या गंभीर है और हम बेरोज़गारी के 'टिक टिक बम' पर बैठे हैं।

जनार्दन रेड्डी के भाजपा में जाने से भड़की कांग्रेस

तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, बीजेपी माफियाओं की संरक्षक

नई दिल्ली, (आरएनएन)। कांग्रेस ने कर्नाटक में कल्याण राज्य प्रगति पक्ष के विधायक जी जनार्दन रेड्डी के भाजपा में शामिल होने पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि खनन माफिया को पार्टी में शामिल कर भाजपा ने जता दिया है कि वह माफियाओं की संरक्षक है और भ्रष्टाचार का पोषण करती है। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने बुधवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि बड़ा सवाल है कि श्री रेड्डी के खिलाफ 20 मामले लंबित हैं और भ्रष्टाचार करने के अनेक साक्ष्य होने के बावजूद उन्हें बचाया जा रहा है। सरकार को बताना चाहिए कि जब उनके खिलाफ सबूत भी है तो फिर उनके लिए लाल कालीन क्यों बिछाई जा रही है। उन्होंने प्रश्न किया 'क्या मोदी सरकार अपने इस कदम से भ्रष्टाचार को ख़त्म करने के दावों को खोखला करार नहीं कर रही है।

कांग्रेस के पास युवाओं को रोजगार देने की ठोस योजना: प्रियंका

प्रियंका ने कहा, भारतीय रोजगार रिपोर्ट 2024 कहती है-भारत के कुल वर्कफोर्स में जितने बेरोजगार हैं, उनमें 83 प्रतिशत युवा हैं। कुल बेरोजगारों में शिक्षित युवाओं की हिस्सेदारी सन 2000 में 35.2 प्रतिशत थी। 2022 में यह 65.7 प्रतिशत यानी लगभग दोगुनी हो गई है। दूसरी ओर प्रधानमंत्री के मुख्य आर्थिक सलाहकार कह रहे हैं कि सरकार बेरोजगारी की समस्या हल नहीं कर सकती। यही भाजपा सरकार की सच्चाई है। आज देश का हर युवा समझ चुका है कि भाजपा रोजगार नहीं दे सकती। उन्होंने कहा, 'कांग्रेस पार्टी के पास युवाओं को रोजगार देने की ठोस योजना है-खाली पड़े 30 लाख सरकारी पद तत्काल भरे जाएंगे। हर ग्रेजुएट डिप्लोमाधारक को एक लाख रुपये सालाना की अप्रेंटिसशिप। पेपर लीक के खिलाफ नया सख्त कानून बनाएंगे और जिआईजी वर्कर्स को सामाजिक सुरक्षा की गारंटी देंगे तथा स्टार्ट-अप के लिए 5000 करोड़ का राष्ट्रीय फंड देंगे। कांग्रेस सरकार रोजगार क्रांति के जरिये देश के युवाओं का हाथ मजबूत करेगी।

वायुसेना सीमापार भी ताकत दिखा सकती है बालाकोट ऑपरेशन में यह साबित भी हुआ

'एयरोस्पेस पावर इन फ्यूचर कॉन्फ्लिक्ट्स' पर सेमिनार में वायुसेना अध्यक्ष बोले

नई दिल्ली। इंडियन एयरफोर्स के प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने बुधवार को कहा कि अगर राजनीतिक इच्छाशक्ति हो तो दुश्मन की सीमा में दाखिल होकर वायुसेना की ताकत दिखाई जा सकती है। बालाकोट जैसे ऑपरेशन में यह साबित भी हुआ है।

वीआर चौधरी ने 'एयरोस्पेस पावर इन फ्यूचर कॉन्फ्लिक्ट्स' विषय पर सेमिनार में कही। उन्होंने कहा कि रणनीतिक फायदे के लिए आज सभी देश स्पेस बेस्ड एसेट्स पर निर्भर करते हैं। अंतरिक्ष का सैन्यीकरण और शस्त्रीकरण आज की हकीकत बन गई है। 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में सीआरपीएफ जवानों के काफिले पर हुए आतंकी हमले में 40 जवान शहीद हुए थे। इसके जवाब में इंडियन एयरफोर्स ने 26 फरवरी को पीओके के बालाकोट में एयरस्ट्राइक की थी। इसमें जैश के ठिकानों पर बम बरसाए गए, जिसमें 300 आतंकी मारे गए थे। 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में सीआरपीएफ जवानों के काफिले पर हुए आतंकी हमले में 40 जवान शहीद हुए थे। इसके जवाब में इंडियन एयरफोर्स ने 26 फरवरी को पीओके के बालाकोट में एयरस्ट्राइक की थी। इसमें जैश के ठिकानों पर बम बरसाए गए, जिसमें करीब 300 आतंकी मारे गए थे। एयरोस्पेस के कॉम्पिटिशन से युद्धों के परिणाम तय होते हैं। पूरे मानव इतिहास में आकाश को अक्सर कौतूहल और रिसर्च के क्षेत्र के रूप में देखा गया है, जहां सपने उड़ान भरते हैं और सीमाएं नीले विस्तार में घुल जाती हैं।

ईडी ने गैंगस्टर सज्जू कोठारी और अन्य की 4 करोड़ से ज्यादा की 31 संपत्तियां कुर्क की

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गैंगस्टर सज्जू कोठारी और अन्य की 4.21 करोड़ की 31 संपत्तियां कुर्क कीं हैं। ये कार्रवाई प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए 2002) के प्रावधानों के तहत हुई है। ईडी ने मंगलवार को सज्जू कोठारी, साजिद उर्फ सज्जू गुलाम मोहम्मद कोठारी, अल्लारखा गुलाम मुस्तफा शेख, उनके परिवार के सदस्यों और सहयोगियों के नाम पर 4.21 करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क की। एजेंसी ने सूरत पुलिस द्वारा सज्जू कोठारी और अन्य के खिलाफ जबरन वसूली, हत्या, अपहरण, दंगा, डकैती, जुआ, संपत्ति को नुकसान आदि से संबंधित 6 एफआईटार के आधार पर जांच शुरू की। ईडी की जांच में पता चला कि प्रोसीड्स ऑफ क्र इम (पीओसी)के जरिए सज्जू कोठारी ने जबरन वसूली, हत्या, अपहरण, दंगा, डकैती, जुआ, संपत्ति को नुकसान और ऐसे अन्य अपराधों के जरिए लगभग 4.29 करोड़ कमाए। साजिद उर्फ सज्जू गुलाम मोहम्मद कोठारी, अल्लारखा गुलाम मुस्तफा शेख, उनके परिवार के सदस्यों और सहयोगियों की 31 अचल संपत्तियों को पीएमएलए , 2002 के तहत अस्थायी रूप से कुर्क किया गया है। ईडी ने कहा है कि ये संपत्तियां आपराधिक गतिविधियों में शामिल आय से अर्जित की गई हैं। इस मामले में आगे की जांच जारी है।

सज्जू ने अपराधों के जरिए कमाए करोड़ों

भाजपा प्रत्याशी जितिन प्रसाद ने पीलीभीत से भरा नामांकन पत्र

पीलीभीत। भाजपा प्रत्याशी जितिन प्रसाद ने बुधवार को पीलीभीत बहेड़ी लोकसभा की सीट से नामांकन किया। प्रसाद को भाजपा नेता और मौजूदा सांसद वरुण गांधी का टिकट काट कर लोकसभा चुनाव का प्रत्याशी बनाया गया है। नामांकन से पहले जितिन प्रसाद ने नगर में स्तिथ मां यशवंती देवी के दरबार में माथा टेका और विधि-विधान से पूजा अर्चना के बाद नामांकन के लिए निकले। नामांकन के बाद मंदिर परिसर में ही एक चुनावी सभा का आयोजन किया गया है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दलबल के साथ जितिन प्रसाद ने नामांकन दाखिल कर दिया है।

फिर कठघरे में ताज, इमारत के बाबरकालीन होने का दावा

आगरा। ताजमहल के तेजो महालय होने का विवाद एक बार फिर अदालत में पहुंच गया है। मामले की सुनवाई नौ अप्रैल को नियत की गयी है। लंबे समय से ताजमहल को लेकर विवाद खड़ा किया जाता रहा है। पहले भी इस मामले में कोर्ट में वाद दायर हो चुके हैं। इस बार मथुरा के योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संघ ट्रस्ट और क्षत्रिय शक्तिपीठ विकास ट्रस्ट ने वाद दायर किया है। अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह ने सिविल कोर्ट (सीनियर डिवीजन) में वाद प्रस्तुत किया। कोर्ट ने वाद स्वीकार कर लिया है। सुनवाई के लिए नौ अप्रैल की तारीख नियत की गई है। वकील अजय प्रताप सिंह ने विगत जनवरी माह में वाद प्रस्तुत किया था। उस समय न्यायालय ने सुनवाई के बाद वादी को धारा 80(1) सिविल प्रक्रिया संहिता नोटिस की कार्यवाही पहले पूरी करने को कहा था। प्रतिवादी को नोटिस भेजकर दो महीने की समय सीमा के बाद दोबारा वाद दायर किया। वाद में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा महानिदेशक नई दिल्ली, अधीक्षक आगरा सर्किल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग व पर्यटन निदेशालय द्वारा महानिदेशक पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ को प्रतिवादी बनाया है।

लोकसभा चुनाव से पहले 500 रुपए के नोटों के ढेर पर सोते दिखे नेताजी

सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही तस्वीर

दिसपुर। लोकसभा चुनाव से पहले असम में यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी लिबरल (यूपीपीएल) के एक निलंबित सदस्य की कथित तौर पर नोटों की गड्डियों के साथ सोने की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद विवाद पैदा हो गया है। तस्वीर में दिख रहे शख्स की पहचान बेंजामिन बासुमतारी के रूप में की गई है। तस्वीर में बेंजामिन को 500 रुपए के नोटों के ढेर के साथ बिस्तर पर सोते हुए देखा जा सकता है। बेंजामिन ने पत्रकारों को बताया कि यह तस्वीर पांच साल पुरानी है और आरोप लगाया कि इसे वायरल करने के पीछे राजनीतिक साजिश है। पांच साल पहले उन्होंने अपनी बहन से पैसे उधार लिए थे और मौज-मस्ती में फोटो खींची थी।

यूपीपीएल ने दी ये सफाई: बता दें कि यूपीपीएल ने इस मुद्दे से खुद को दूर रखने का प्रयास करते हुए कहा कि बासुमतारी को निलंबित कर दिया गया है और वीसीडीसी पद से भी हटा दिया गया है।

बेंजामिन बासुमतारी पर क्या है आरोप: बेंजामिन बासुमतारी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना और ग्रामीण रोजगार योजना के तहत लाभार्थियों से रिश्वत ली थी। इस मामले में वे आरोपी है। उनकी नोटों वाली तस्वीर वायरल होने से लोकसभा चुनाव में यूपीपीएल की मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

प्रशांत भूषण ने केंद्र पर साधा निशाना: सामाजिक कार्यकर्ता और वकील प्रशांत भूषण ने बेंजामिन बासुमतारी की तस्वीर शेयर करते हुए लिखा कि मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने भ्रष्टाचार मुक्त सरकार देने का संकल्प लिया है। असम में इसकी सहयोगी पार्टी यूपीपीएल के एक सदस्य को 500 रुपये के नोटों के ढेर पर सोते हुए पकड़ा गया। अच्छे दिन आ गए हैं तो नींद भी अच्छी आएगी।

यह है पूरा मामला: सोशल मीडिया पर वायरल हो रही तस्वीर में बेंजामिन बासुमतारी 500 के नोटों के ढेर पर सोए हुए दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान उसके शरीर के ऊपर भी 500-500 रुपये के नोट रखे हुए हैं। लोकसभा चुनाव 2024 में असम में भाजपा की सहयोगी पार्टी यूपीपीएल है। दोनों पार्टियां एक साथ मिलकर चुनाव लड़ रही हैं।

महाराष्ट्र एटीएस चीफ दाते एनआईए के नए डीजी होंगे

नई दिल्ली। केंद्र ने मंगलवार को नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए), नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (एनडीआरएफ), स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप (एसपीजी) और पुलिस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ब्यूरो (बीपीआरडी) के अहम पदों पर नई नियुक्तियों के आदेश दिए हैं। महाराष्ट्र एंटी टेरोरिस्ट स्क्वाड (एटीएस) के चीफ सदानंद वसंत दाते को एनआईए, केरल कैडर के आईपीएस अफसर एस सुरेश को एसपीजी की एडीजी उत्तर प्रदेश कैडर के आईपीएस ऑफिसर पीयूष आनंद को एनडीआरएफ और राजस्थान कैडर के आईपीएस अधिकारी राजीव कुमार शर्मा को बीपीआरडी का जिम्मा दिया गया है।

।। आज का इतिहास ।।

- **1561:** अकबर ने मालवा की राजधानी सारंगपुर पर हमला कर बाजबहादुर को हराया था।
- **1736:** ब्रिटेन के अविष्कारक जेम्स वाट का उत्तरी इंग्लैंड के ग्रीनीक नगर में जन्म हुआ।
- **1802:** ओल्बर्स ने क्षुद्रग्रह पल्लास को खोजा।
- **1806:** वाशिंगटन कॉलेज की स्थापना की गई।
- **1809:** मेडलिन युद्ध में फ्रांस के हाथों स्पेन की हार हुई।
- **1891:** पहला विश्व भारोत्तोलन चैम्पियनशिप आयोजित किया गया।
- **1910:** फ्रेंच इन्वेंटर हेनरी फाबरे ने दुनिया का पहला सीप्लेन कैनार्ड बनाया जिसने 457 मीटर लंबी उड़ान भरी थी।

Filmi तड़का

निम्रत कौर ने बीकानेर में मनाई शानदार होली

मुंबई। एक्ट्रेस निम्रत कौर ने राजस्थान के बीकानेर में शानदार तरीके से होली मनाई। एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर अपनी कुछ फोटोज शेयर की, जिनमें उन्हें गुजिया खाते हुए और धूप का आनंद लेते हुए देखा जा सकता है। एक्ट्रेस ने सबसे पहले अपने कॉफी मग की तस्वीर शेयर की। दूसरी तस्वीर 'गुजिया' की थी, जिसे निम्रत ने 'पोस्ट होली डिटॉक्स' के रूप में टैग किया था। इसके बाद एक्ट्रेस ने एक सेल्फी शेयर की, जिसमें वह सुबह की धूप का आनंद लेती नजर आ रही थीं और इसे कैप्शन दिया गया, सुबह की धूप। निम्रत ने इस बात का खुलासा नहीं किया कि वह राजस्थान में किसी प्रोजेक्ट की शूटिंग के लिए वहां हैं या छुट्टियां मनाने के लिए। निम्रत ने सबसे पहले अनुराग कश्यप के प्रोडक्शन की फिल्म पैडलर्स में अभिनय किया था।

अभिनेता राम चरण के बर्थडे पर फिल्म 'गेम चेंजर' के मैकर्स ने पहला गाना रिलीज किया

मुंबई। टॉलीवुड सुपरस्टार राम चरण बुधवार को अपना 39वां बर्थडे मना रहे हैं। अभिनेता को बुधवार सुबह प्रसिद्ध तिरूपति मंदिर में देखा गया। वह अपनी पत्नी उपासना कामिनेनी और नवजात बच्ची क्लिन कारा कोनिडेला के साथ मंदिर में दर्शन करने गए थे। जब वह थोड़ी देर के लिए मंदिर में थे, तो फोटोग्राफरों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। उसी का एक वीडियो अब पूरे सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें आप देख सकते हैं कि राम चरण खुद को शांत रखने की कितनी कोशिश कर रहे हैं। वहीं इस खास मौके पर सुपरस्टार राम चरण की अपकमिंग मूवी 'गेम चेंजर' से मेकर्स ने पहला गाना रिलीज कर दिया है। सुपरस्टार राम चरण और कियारा आडवाणी स्टारर मूवी 'गेम चेंजर' का पहला गाना 'जगरकंदी' रिलीज हुआ है। जो काफी रंगीन और धमाकेदार म्यूजिक से लबरेज है। सामने आए निर्देशक शंकर की अपकमिंग मूवी के इस पहले गाने को मेकर्स ने सुपरस्टार राम चरण के बर्थडे के दिन 3 भाषाओं में रिलीज किया है। फिल्म के गाने को पहले तेलुगु, तमिल के साथ-साथ हिंदी में भी जारी कर दिया है।

गगन शक्ति में पोखरण से फाइटर जेट साधेंगे निशाना

एक बार फिर कांपेगा पाकिस्तान

1 अप्रैल से 10 दिन तक चलेगा बड़ा सैन्य अभ्यास

नई दिल्ली। भारतीय वायुसेना का सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास 'गगन शक्ति' आगामी 1 अप्रैल से शुरू होगा, जिसके लिए थल सेना ने उन्हें लॉजिस्टिक सपोर्ट दिया है। 10 दिन तक चलने वाले इस सबसे बड़े सैन्य अभ्यास में वायुसेना के सभी एयर बेस को सक्रियता किया जाएगा।ये अभ्यास पश्चिमी और उत्तरी दोनों मोर्चों को शामिल करते हुए देश के अलग-अलग हिस्सों में आयोजित किए जाएंगे।

वायुसेना के लड़ाकू विमान और हेलीकॉप्टर देशों के अलग-अलग बेस से ऑप्रेशनल उड़ान भरेंगे और राजस्थान के पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज में लक्ष्यों पर हमला करेंगे। भारतीय थल सेना ने भारतीय वायुसेना के इस अभ्यास के तहत ऑपरेशनल रेल मोबिलाइजेशन प्लान (ओआरएमपी) पहलुओं को लागू करते हुए लगभग 10,000 वायुसैनिकों और गोला-बारूद की पैन इंडिया की मूवमेंट की सुविधा दी है। पोखरण रेंज में हो रहे इस अभ्यास से एक बार फिर पाक कांपेगा।

संक्षिप्त खबरें

एनएमडीसी को पीएसयू अवार्ड

हैदराबाद। भारत के सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी ने 22 मार्च, 2024 को नई दिल्ली में आयोजित 10वें गवर्नेंस नाउ पीएसयू एवार्ड में पांच पुरस्कार जीते। पद्मश्री डा. संजीव बगाई और श्रीमती निर्मल कौर, आईपीएस, सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक, झारखंड पुलिस इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। एनएमडीसी की ओर से सत्येन्द्र राय, अधिशासी निदेशक (पी एंड ए और डीटी) ने अवार्ड प्राप्त किया। इस मौके पर अमिताभ मुखर्जी, सीएमडी (अतिरिक्त प्रभार) को उनके दूरदर्शी नेतृत्व और भविष्यवादी दृष्टिकोण के लिए प्रतिष्ठित सीएमडी लीडरशिप एवार्ड से सम्मानित किया गया और जय प्रकाश, महाप्रबंधक (नैगम संचार) को कम्यूनिकेशन लीडर अवार्ड प्रदान किया गया।

कोक स्टूडियो का होली उत्सव

नई दिल्ली। पहले सीज़न की सफलता के बाद कोक स्टूडियो भारत अपने दूसरे सीज़न के साथ लौट रहा है और प्रतिभाशाली कलाकारों एवं यादगार गीतों के साथ भारत की समृद्ध संस्कृति का जश्न मनाने के लिए तैयार है। पहले सीज़न को मिली शानदार सफलता के बाद कोक स्टूडियो भारत सीज़न दो में विज़ुअल स्टोरीटैलिंग की नई अवधारणा के साथ अपना सुनाओ को समृद्ध बनाने के लिए तैयार है। अर्णब राय, वाइस प्रेज़ीडेन्ट, मार्केटिंग, कोका-कोला इंडिया और साउथ वेस्ट एशिया ने कहा, 'कोक स्टुडिया, एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त प्लेटफ़ार्म है, जो हमेशा से प्रमाणित क्षेत्रीय संगीत का जश्न मनाता रहा है। देश के कई हिस्सों से संगीत की परम्परा न सिर्फभारत में बल्कि दुनिया भर में एक विशेष मोड़ पर हैं।

टाटा साल्ट का नया अभियान

नई दिल्ली। भारत में आयोडीन युक्त नमक के अग्रणी ब्रांड, टाटा साल्ट ने अपनी मशहूर जिंगल, 'नमक हो टाटा का, टाटा नमक' के साथ एक अनूठा अभियान शुरू किया है । विभिन्न मीडिया प्लेटफार्म पर शुरू किया, यह अभियान 'देश का नमक' के रूप में ब्रांड की सर्वव्यापकता का प्रदर्शन करता है, और नये और युवा भारत की नब्ज़ पर भी हाथ रखता है। दीपिका भान, अध्यक्ष, पैकेज्ड फूड्स - इंडिया, टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स ने कहा, "टाटा साल्ट भारत के सबसे भरोसेमंद और ज़िम्मेदार ब्रांडों में से एक है। ओगिल्वी के चीफ क्रिएटिव ऑफिसर (वेस्ट), अनुराग अग्निहोत्री ने कहा, 'हमारे देश के अधिकांश लोगों के लिए, नमक का मतलब टाटा साल्ट है।(एजेंसी)

फिनटेक कंपनियों की जांच कर रहा प्रतिस्पर्धा आयोग

नई दिल्ली (भाषा)।

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) की प्रमुख रवनीत कौर ने कहा है कि सीसीआई कुछ वित्तीय प्रौद्योगिकी इकाइयों के खिलाफ जांच कर रहा है। इसका मकसद यह पता लगाना है कि प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने के उनके तरीके प्रतिस्पर्धा को प्रभावित तो नहीं कर रहे हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि नियामक प्रतिस्पर्धी डिजिटल बाजार सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठा रहा है। आयोग विभिन्न संशोधित नियमों, डिजिटल बाजार में प्रतिस्पर्धा-रोधी गतिविधियों के खिलाफ व्यवस्था के साथ अनुचित व्यापार के तौर-तरीकों पर अंकुश लगाने के अपने प्रयासों को मजबूत कर रहा है।

प्रतिस्पर्धा आयोग की चेयरपर्सन रवनीत कौर ने कहा कि प्रतिस्पर्धा कानून को लेकर विभिन्न इकाइयों के बीच जागरूकता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि हमारा ध्यान 'विनियमन और स्वतंत्रता के बीच सही संतुलन बनाने' पर है। उन्होंने कहा नियामक का ध्यान बड़ी तकनीकी कंपनियों के साथ-साथ वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) और ऑनलाइन मध्यस्थ सेवा

प्रदाताओं सहित विभिन्न क्षेत्रों पर है।

कौर ने कहा, 'सीसीआई फिनटेक क्षेत्र की कुछ इकाइयों की जांच कर रहा है। हम देख रहे हैं कि फिनटेक कंपनियां कैसे प्रौद्योगिकी का लाभ उठा रही हैं और क्या इसके जरिये वे बाजार में प्रतिस्पर्धा को प्रभावित कर रही हैं? मामले में जांच जारी है।'

इस बारे में और जानकारी दिये बिना, उन्होंने यह भी कहा कि नियामक फिल्म उद्योग खासकर फिल्म वितरकों से संबंधित कुछ मामलों को देख रहा है। कौर के अनुसार, बाजार खराब करने की गतिविधियों को दूर कर और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढावा देने से अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इससे कुल मिलाकर नवोन्मेष और समग्र आर्थिक वृद्धि को गति मिलेगी।

उन्होंने कहा, "यह सब विनियमन और स्वतंत्रता के बीच सही संतुलन बनाने को लेकर है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि बाजार प्रतिस्पर्धी बना रहे और यह सभी संबद्ध पक्षों के लिए निष्पक्ष रूप से काम करे।'

कौर ने कहा कि आयोग डिजिटल बाजार से संबंधित मामलों में तेजी ला रहा है। कंपनियां प्रतिस्पर्धा कानूनों का पालन करने के महत्व को अब समझने लगी हैं। यह अधिक पारदर्शी और निष्पक्ष डिजिटल बाजार सुनिश्चित करेगा।

जूमकार ने एको ड्राइव के साथ की साझेदारी

बेंगलुरु (वार्ता)।

सेल्फ-ड्राइव कार शेयरिंग मार्केटप्लेस जूमकार होल्डिंग्स इंक ने एको के कार खरीदारी से जुड़े प्लेटफ़ार्म एको ड्राइव के साथ साझेदारी की है। कंपनी ने यहां जारी बयान में बताया कि यह साझेदारी स्थानीय जूमकार होस्ट्स को अपने कारों की फ्लीट बढ़ाने में मदद करेगी।

इस साझेदारी के साथ, एको ड्राइव जूमकार होस्ट्स को नई कार की खरीद पर 85,000 रुपये तक की बड़ी बचत होगी। इसके साथ ही उन्हें इंस्टेंट लोन अप्रूवल, एक्सप्रेस कार डिलीवरी और कार फाइनेंस पर आकर्षक आफर जैसे लाभ भी मिलेंगे।

दुनिया में अवैध लेनदेन का सिर्फ 3% मिल पाता है वापस

सिंगापुर (भाषा)।

वैश्विक बैंकिंग नेटवर्क के जरिए लेनदेन किए गए 96 प्रतिशत से अधिक धन का पता नहीं चल पाता है और अनुमानित 2,000 से 3,000 अरब अमेरिकी डालर के अवैध व्यापार में से केवल 2-3 प्रतिशत धन का ही वर्तमान में पता लगाया जाता है और उसे वापस किया जाता है।

इंटरपोल के महासचिव जुर्गन स्टॉक ने यहां पत्रकारों से कहा कि इंटरपोल अपने 196 सदस्य देशों में कानून प्रवर्तन एजेंसियों और निजी वित्त क्षेत्रों के साथ काम करता है। इसका लक्ष्य दुनियाभर में अवैध व्यापारियों, मादक पदार्थों, मानव तस्करी, हथियारों और वित्तीय संपत्तियों की बड़ी मात्रा में धन से जुड़ी बढ़ती धोखाधड़ी को नियंत्रित करना है।

वैश्विक बैंकिंग नेटवर्क के जरिए अवैध व्यापार से व्यापक रूप से अनुमानित 2,000 से 3,000 अरब अमेरिकी डालर के वार्षिक लेनदेन को नियंत्रित करने के लिए, 'हम लेनदेन की जांच करने के वास्ते एक तंत्र स्थापित करने के लिए दुनियाभर के बैंकिंग संघों से बात कर रहे हैं।'

उन्होंने कहा, 'वर्तमान में केवल दो से तीन प्रतिशत पैसे का ही पता लगाया जाता है और पीढ़ितों को लौटाया जाता है। वैश्विक बैंकिंग नेटवर्क के जरिये लेनदेन वाले 96 प्रतिशत से अधिक धन का पता नहीं चल पाता।'

स्टाक ने कहा कि कृत्रिम मेधा (एआई) इसे और बदतर बना रही है। यह वॉयस क्लोनिंग की अनुमति देती है। दुनियाभर के अपराधी इसका फायदा उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि 'सिंगापुर एंटी-स्कैम सेंटर' एक ऐसा माडल है जिसका अन्य देशों को अनुसरण करना चाहिए।

दुनिया का नंबर वन बीमा ब्रांड बनने पर एलआईसी ने जताई खुशी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

ब्रांड फाइनेंस इंश्योरेंस 2024 द्वारा एलआईसी आफ इंडिया को दुनिया के सबसे मजबूत बीमा ब्रांडों में प्रथम स्थान दिया गया है। इस उपलिब्ध पर भारतीय जीवन बीमा निगम ने खुशी जताई है।

कंपनी के अध्यक्ष सिद्धार्थ मोहंती ने कहा कि भारतीय जीवन बीमा निगम अपने सभी पालिसीधारकों और हितधारकों के आभारी है जिन्होंने लगभग सात दशकों से भारतीय जीवन

बीमा निगम के प्रति अपना विश्वास कायम रखा है। हम अपने ग्राहकों की जरूरतों के प्रति सचेत है और उनकी बीमा और निवेश की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगातार नए उत्पाद विकसित कर रहे है। हम ग्राहक सेवा पर लगातार ध्यान केंद्रित कर रहे है और अपने सभी हितधारकों के लिए मूल्य संवर्धन कर रहे है। उन्होंने कहा कि ब्रांड फाइनेंस इंश्योरेंस द्वारा सबसे मजबूत बीमा ब्रांड 2024 की सूची में पहला स्थान पाकर हम अभिभूत है, जो हम पर उनके विश्वास का प्रतिबिंब है।

7.5 लाख करोड़ का कर्ज लेगी सरकार

■ वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही में बाजार से लिया जाएगा यह कर्ज

■ इससे आर्थिक वृद्धि को गति देगी सरकार ■ राजस्व अंतर को पाटने में भी मिलेगी मदद

नई दिल्ली (भाषा)।

वित्त मंत्रालय ने बुधवार को कहा कि केंद्र वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल-सितम्बर के दौरान बाजार से 7.5 लाख करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रहा है। इसका मकसद आर्थिक वृद्धि को गति देने के साथ राजस्व अंतर को पाटना है।

■ आलोच्य वित्त वर्ष में कुल 14.13 लाख करोड़ रुपये की उधारी जुटाए जाने का अनुमान
■ इसमें से 53 फीसद राशि पहली छमाही में जुटाए जाने का लगाया गया है अनुमान
■ वर्ष 2023-24 का सकल उधारी अनुमान 15.43 लाख करोड़ रुपये से कम रहेगा

वित्त वर्ष 2024-25 के लिए बाजार से 14.13 लाख करोड़ रुपये की उधारी का अनुमान है। इसमें 7.5 लाख करोड़ रुपये यानी 53 प्रतिशत राशि पहली छमाही में जुटाई जाएगी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अंतरिम बजट में राजस्व अंतर को पूरा करने के लिए प्रतिभूतियों के जरिए 14.13 लाख करोड़ रुपये जुटाने का प्रस्ताव किया है।

यह 2023-24 के लिए सकल उधारी अनुमान 15.43 लाख करोड़ रुपये से कम है। वैसे यह अब तक की सर्वाधिक राशि थी।

उन्होंने कहा था, 'वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान दिनांकित प्रतिभूतियों के जरिये सकल और शुद्ध बाजार कर्ज क्रमशः 14.13 लाख करोड़ रुपये और 11.75 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है।'

उन्होंने कहा था, 'वित्त वर्ष 2023-24 के मुकाबले दोनों उससे कम होंगे। अब जब निजी निवेश बढ रहा है, ऐसे में केंद्र सरकार की कम उधारी से निजी क्षेत्र के लिए ऋण उपलब्धता बढ़ेगी।' सरकार के बड़े पैमाने पर पूंजीगत व्यय के कारण इस्पात और सीमेंट क्षेत्र में निजी निवेश बढ़ने के संकेत मिल रहे हैं।

कुछ और सुधारों से 9% वृद्धि संभव

नई दिल्ली (भाषा)।

सोलहवें वित्त आयोग के चेयरमैन अरविंद पनगढ़िया ने बुधवार को कहा कि भारत अगले पांच साल में कुछ और सुधारों को लागू करके वास्तविक रूप से अपनी आर्थिक वृद्धि को मौजूदा सात प्रतिशत से बढ़ाकर नौ प्रतिशत के करीब पहुंचा सकता है। पनगढ़िया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को कारोबार क्षेत्र के लिए अनुकूल स्थान बनाने को पिछले 10 साल में कड़ी मेहनत की है, इसलिए निवेश आ रहा है। 'टाइम्स नाऊ' के एक सम्मेलन में उन्होंने कहा, 'आज अर्थव्यवस्था खुली है। अगले दो-तीन दशक में हम बहुत तेजी से वृद्धि कर सकते हैं।' चालू वित्त वर्ष (2023-24) की तीसरी तिमाही में भारत की अर्थव्यवस्था उम्मीद से बेहतर 8.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी जो पिछले डेढ साल का सबसे ऊंचा आंकड़ा है।

प्रमुख अर्थशास्त्री ने कहा, 'भारत वर्तमान में सात प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। निश्चित रूप से अगले पांच साल में कुछ और सुधारों के साथ हम वास्तविक रूप से इसे नौ प्रतिशत के करीब पहुंचा सकते हैं। और इसे कुछ दशक तक आसानी से कायम रखा जा सकता है।' पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यम के बयान "भारत के नवीनतम सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) आंकड़े बिल्कुल रहस्यमय हैं और उन्हें समझना मुश्किल है" पर एक सवाल का जवाब देते हुए पनगढिया ने कहा, 'यदि आप भ्रमित हैं, तो पहले आपको जांचना होगा, (क्या) धुंध आपके ही चश्मे पर है...या कहीं और।'

पनगढ़िया ने कहा कि मोदी सरकार के दौरान जीडीपी की गणना के लिए पद्धतिगत बदलाव की सिफारिश पिछले प्रशासन (संप्रग सरकार) द्वारा नियुक्त निकायों द्वारा की गई थी। उन्होंने कहा, 'किसी ने भी उन लोगों की ईमानदारी पर सवाल नहीं उठाया है जो वास्तव में ये (जीडीपी) संख्याएं निकालते हैं।

अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने को व्यापक सुधारों का आह्वान

नई दिल्ली (वार्ता)।

महिला उद्योग निकाय फिक्की एफएलओ ने भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए व्यापक सुधारों का आह्वान किया है, जिससे 1.1 कारोड़ से अधिक नौकरियां पैदा हो सकती है, जिनमें से 70 प्रतिशत महिलाओं को मिलेंगी और एक नए आर्थिक क्षेत्रों को अनलॉक किया जाएगा।

फिक्की एफएलओ के चार दशक पूरे होने के अवसर पर यहां जारी एक रिपोर्ट में, फिक्की ने कहा कि घरों और अर्थव्यवस्थाओं को चलाने के लिए अवैतनिक काम महत्वपूर्ण है, फिर भी सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) और आर्थिक विकास के अनुमानों में यह ज्यादातर अदृश्य और बेहिसाब रहता है। फिक्की एफएलओ की अध्यक्ष सुधा शिवकुमार ने कहा, मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किए जाने वाले देखभाल कार्य के कम मूल्यांकन और अदृश्यता के कारण बाजार विफल हो गया है, जहां कुशल और प्रतिभाशाली महिलाएं अपनी आर्थिक क्षमता का एहसास करने में असमर्थ है, जिससे व्यापक आर्थिक स्तर पर संसाधनों का गलत आवंटन हो रहा है।

फिक्की ने कहा देखभाल अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ाने से न केवल महिलाओं की श्रम बल भागीदारी में लैंगिक अंतर को पाटने की क्षमता है, बल्कि एक नए आर्थिक खंड को भी खोलने की क्षमता है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार देखभाल सेवा क्षेा में बढ़ते निवेश से 2030 तक वैश्विक स्तर पर 47.5 करोड़ नौकरियां पैदा करने की क्षमता है।

रिलायंस पावर की दो अनुषंगी कंपनियों ने कर्ज का किया निपटान

नई दिल्ली (भाषा)।

रिलायंस पावर की दो अनुषंगी कंपनियों ने ऑथम इन्वेस्टमेंट की शाखा रिलायंस कामर्शियल फाइनेंस के साथ 1,023 करोड़ रुपये के कर्ज का निपटान किया है।

कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि रिलायंस पावर लिमिटेड की दो अनुषंगी कंपनियों कलाई पावर प्राइवेट लिमिटेड और रिलायंस क्लीनजेन लिमिटेड ने ऑथम इन्वेस्टमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस लिमिटेड (आरसीएफएल) के साथ एक ऋण निपटान और मुक्ति समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने बताया कि 1,023 करोड़ रुपये के कर्ज का निपटान किया है।

रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस के साथ ऋण समझौता रिलायंस पावर द्वारा महाराष्ट्र में अपनी 45 मेगावाट की पवन ऊर्जा परियोजना को जेएसडब्ल्यू रिन्यूएबल एनर्जी को 132 करोड़ रुपये में बेचने की घोषणा के कुछ दिन बाद आया है। कलाई पावर ने दिसम्बर 2023 में अरुणाचल प्रदेश में अपनी प्रस्तावित 1,200 मेगावाट की जल-विद्युत परियोजना के विकास अधिकार टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को 128 करोड़ रुपये में बेच दिए थे। कंपनी के एक अधिकारी के मुताबिक, इन संपत्तियों की बिक्री से जुटाए गए कोष का इस्तेमाल कर्ज चुकाने में किया गया।

ऑथम इन्वेस्टमेंट ने बैंकों के नेतृत्व वाली समाधान प्रक्रिया में 2022 में रिलायंस कैपिटल लिमिटेड से रिलायंस कामर्शियल फाइनेंस और रिलायंस होम फाइनेंस का अधिग्रहण किया था। रिलायंस पावर पिछले कुछ महीनों में सक्रिय रूप से डीबीएस बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और एक्सिस बैंक सहित विभिन्न बैंकों के साथ ऋण निपटान समझौतों पर हस्ताक्षर कर रही है। रिलायंस पावर का लक्ष्य 31 मार्च 2024 के अंत तक एकल आधार पर एक ऋण-मुक्त कंपनी बनने का है। वित्त वर्ष 2023 के अंत में कंपनी पर करीब 700 करोड़ रुपये का कर्ज बकाया था।

नए गंतव्यों को जोड़कर दोगुना विस्तार करेगी इंडिगो

नई दिल्ली (भाषा)।

इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स ने कहा कि एयरलाइन का लक्ष्य 2030 तक नए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मार्गों के साथ-साथ गंतव्यों का आकार दोगुना करना है।

इंडिगो 60 प्रतिशत से कुछ अधिक की घरेलू बाजार हिस्सेदारी के साथ देश की सबसे बड़ी एयरलाइन है। यह ए321 एक्सएलआर विमान पर भी बड़ा दांव लगा रही है, जिसके '2025 में' उसके बेड़े का हिस्सा बनने की उम्मीद है। इसको शामिल करके एयरलाइन का मकसद विदेशी उपस्थिति को और बढ़ाना है। एल्बर्स ने एक साक्षात्कार में कहा कि वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति मजबूत करने के साथ-साथ उसका विस्तार करने का प्रयास कर रही इंडिगो का अगला बड़ा लक्ष्य दशक के अंत तक अपना आकार दोगुना करना होगा।

अप्रैल 2024 से शुरू होने वाले अगले वित्त वर्ष के लिए इंडिगो प्रमुख ने कहा हर हफ्ते एक विमान आ रहा है। आपूर्ति श्रृंखला के साथ-साथ प्रैट एंड व्हिटनी इंजन संकट के बीच एल्बर्स ने इस बात पर भी जोर दिया कि एयरलाइन कई राहत उपाय कर रही है जिनके परिणाम सामने आ रहे हैं और एयरक्राफ्ट ऑन ग्राउंड (एओजी) की स्थिति 'स्थिर' है। वर्तमान में वाहक 88 घरेलू और 33 अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों तक उड़ान भरता है। इसके बेड़े में 360 से अधिक विमान हैं। एल्बर्स ने कहा, 'वर्ष 2030 तक आज के आकार से दोगुना होना, वैश्विक पहुंच वाली एक एयरलाइन बनना महत्वाकांक्षी लक्ष्य है... अधिक कोडशेयर साझेदारी की उम्मीद की जा सकती है।'

इंडिगो के पास वर्तमान में टर्किश एयरवेज, ब्रिटिश एयरवेज, कतर एयरवेज, अमेरिकन एयरलाइंस, केएलएम-एयर फ्रांस, क्वांटास, जेटस्टार और वर्जिन अटलांटिक के साथ कोडशेयर है।

देश में 5000 चार्जिंग स्टेशन लगाएगी टाटा

नई दिल्ली (भाषा)। टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी ने इस साल के अंत तक देशभर में 5,000 सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड के साथ गठजोड़ किया है। टाटा मोटर्स की इकाई टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी (टीपीईएम) ने बुधवार को बयान में कहा कि इस गठजोड़ के तहत एचपीसीएल के पेट्रोल पंप पर चार्जिंग स्टेशन लगाये जाएंगे। ये स्टेशन उन स्थानों पर लगाये जाएंगे जहां 1.2 लाख से अधिक टाटा इलेक्ट्रिक वाहनों के मालिक प्रायः आते हैं। दोनों संस्थाओं ने इस संबंध में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। कंपनियां सह-ब्रांडेड आरएफआईडी कार्ड के माध्यम से एक सुविधाजनक भुगतान प्रणाली शुरू करने की संभावना भी टटोल रही हैं। एचपीसीएल के पास 21,500 से अधिक पेट्रोल पंप का नेटवर्क है। कंपनी का दिसम्बर, 2024 तक 5,000 इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने का लक्ष्य है। टीपीईएम के मुख्य रणनीति अधिकारी बालाजी राजन ने कहा, 'एचपीसीएल के साथ यह रणनीतिक साझेदारी भारत के ईवी परिवेश को आगे बढाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

उज्जीवन स्माल फाइनेंस बैंक की नई शाखाएं खुलीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने यूपी के बागपत जिले में स्थित भादल में और बिजनौर जिले में स्थित जमालपुर पठानी में अनबैंक्ड रूरल सेंटर (यूआरसी) की अपनी नई शाखा खोली है। बैंक अभी यूपी में 5 लाख से ज्यादा ग्राहकोंको सेवा प्रदान करता है।

यह रणनीतिक विस्तार लोगों की विविध एवं लगातार बढ़ रही वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हुआ है। जमालपुर पठानी में इस यूआरसी का शुभारंभ व्यक्तिगत बैंकिंग सेवाओं को और भी आसान बनाएगा। इनमें आकर्षक ब्याज दरों पर सावधि जमा और बचत खाते तथा चालू खाता शामिल है।

कार्बन मुक्त की कवायद में जॉब भी पैदा कर सकता है भारत

■ अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने कहा है कि 'कार्बन-मुक्त' के जरिये होगा नौकरियों का सृजन

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने कहा है कि कार्बन-मुक्त राह पर आगे बढऩे से भारत में लाखों नौकरियों का सृजन होगा।

'यूएस-इंडिया क्लाइमेट टेक्नोलॉजीज एक्शन ग्रुप--फोरम ऑन डीकार्बोनाइजिंग पाथवेज' को संबोधित करते हुए गार्सेटी ने कहा, 'भारत इस क्षेत्र और दुनिया के लिए ऐसा (कार्बन मुक्त या हरित अर्थव्यवस्था को बढजवा देना) भी कर सकता है...जिसे एक अगुवा के रूप में देखा जा सकता है...जो भारत पहले ही है।' उन्होंने कहा कि कार्बन मुक्त (डीकार्बोनाइजिंग) राह अपनाकर भारत अगले 20 साल में लाखों नौकरियों का सृजन कर सकता है।

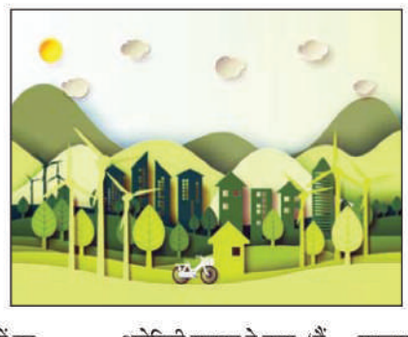

अमेरिकी राजदूत ने कहा, 'मैं आपको गारंटी देता हूं, जितनी जल्दी हम यह (डीकार्बोनाइजिंग) करेंगे, नौकरियों के उतने ही अधिक अवसर उत्पन्न होंगे। भारत इसे सबसे पहले अपने लिए करेगा।' भारत के 2070 तक शुद्ध शून्य कॉर्बन उत्सर्जन लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उनका यह बयान महत्वपूर्ण है।

भारत के पास वर्तमान में करीब 184 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता है जिसमें करीब 47 गीगावाट बड़े पनबिजली संयंत्र, 75 गीगावाट सौर और 45 गीगावाट पवन ऊर्जा शामिल है। देश में करीब 434 गीगावाट की कुल बिजली उत्पादन क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी 42 प्रतिशत से अधिक है। भारत ने 2030 तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा हासिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है।

आईपीएल रिकॉर्ड्स

दुबे ने लगाए सबसे ज्यादा सिक्स

शिवम दुबे ने मंगलवार को गुजरात के खिलाफ 5 सिक्स लगाए, इसी के साथ उनके 2023 के आईपीएल से अब तक कुल 41 सिक्स हो गए। सबसे ज्यादा सिक्स लगाने वाले प्लेयर्स में वह पहले नंबर पर आ गए। उन्होंने फाफ डु प्लेसिस को पीछे किया। फाफ ने 2023 सीजन से अब तक 36 सिक्स लगाए हैं।

गुजरात की सबसे बड़ी हार

गुजरात टाइटंस को आईपीएल में पहली बार 63 रन से हार का सामना करना पड़ा। रन के लिहाज से यह टीम की सबसे बड़ी हार है। इससे पहले 2023 में टीम को मुंबई इंडियंस ने 27 रन से हराया था। टीम ने टूर्नामेंट में 35 मैच खेले हैं और महज 11 में टीम को हार का सामना करना पड़ा।

चाहर पावरप्ले में सबसे सफल

चेन्नई के बॉलर दीपक चाहर ने मंगलवार को पावरप्ले में 2 विकेट लिए। इसी के साथ वह आईपीएल पावरप्ले में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों में दूसरे नंबर पर आ गए। उन्होंने संदीप शर्मा को पीछे किया। संदीप के पावरप्ले में 55 विकेट हैं। चाहर के अब 56 विकेट हो गए हैं। पावरप्ले में सबसे ज्यादा विकेट भुवनेश्वर कुमार के नाम है। उन्होंने 158 इनिंग्स में 61 विकेट लिए हैं।

चेन्नई 17वीं बार 50+ रन से जीती

चेन्नई सुपर किंग्स ने 17वीं बार 50+ रन के मार्जिन से जीत दर्ज की। अब तक कोई टीम इतने बड़े मार्जिन से 13 से ज्यादा बार जीत नहीं सकी है। चेन्नई के बाद मुंबई ने 13 बार 50+ रन के अंतर से जीत दर्ज की।

विराट के आईपीएल में 51 अर्धशतक

विराट कोहली ने पंजाब किंग्स के खिलाफ अपना 51वां अर्धशतक जमाया। वे 50 से ज्यादा फिफ्टी जमाने के रिकॉर्ड में दूसरे नंबर पर पहुंच गए। उनसे ज्यादा 61 फिफ्टी ऑस्ट्रेलिया के डेविड वॉर्नर ने लगाई हैं। भारतीयों में विराट टॉप पर हैं, उनके बाद शिखर धवन ने 50 अर्धशतक लगाए हैं। विराट कोहली के ओवरऑल टी-20 क्रिकेट में 100 बार फिफ्टी प्लस स्कोर हो गए। वे ऐसा करने वाले भारत के पहले और दुनिया के तीसरे बैटर बने। दुनिया में सबसे ज्यादा 50+ स्कोर का रिकॉर्ड क्रिस गेल के नाम है। गेल ने 455 इनिंग्स में 110 बार 50+ स्कोर बनाया है। दूसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के डेविड वॉर्नर हैं।

मुंबई को 31 रन से हराया, क्लासन ने 34 बॉल पर 80 रन बनाए, अभिषेक-हेड के रिकॉर्ड अर्धशतक

आईपीएल का सबसे बड़ा स्कोर बनाकर जीता सनराइजर्स हैदराबाद

● हैदराबाद

सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) ने इंडियन प्रीमियर लीग-2024 में पहली जीत हासिल की है। टीम ने बुधवार को मौजूदा सीजन के 8वें मैच में मुंबई इंडियंस को 31 रन से हराया। हैदराबाद ने आईपीएल इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर बनाया। पिछला रिकॉर्ड आरसीबी के नाम दर्ज था। बेंगलुरु ने 2013 के सीजन में पुणे वॉरियर्स के खिलाफ 263 रन बनाए थे। राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में बुधवार को मुंबई ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। हैदराबाद ने 20 ओवर में 3 विकेट पर 277 रन बनाए।

जवाब में मुंबई इंडियंस की टीम 20 ओवर में 5 विकेट पर 246 रन ही बना सकी। पैट कमिंस और जयदेव उनादकट ने 2-2 विकेट लिए। हैदराबाद के लिए अभिषेक शर्मा ने 23 बॉल पर 63, ट्रैविड हेड ने 24 बॉल पर 62 रन और हेनरिक क्लासन ने 34 बॉल पर 80 रन बनाए। ऐडन मार्करम ने 28 बॉल पर 42 रन का योगदान दिया। हार्दिक पंड्या और जेराल्ड कूट्जी को एक-एक विकेट मिला। सनराइजर्स के बल्लेबाजों ने अपनी पारी में कुल 18 छक्के लगाए, जो कि इस लीग में एक पारी में तीसरे सबसे ज्यादा छक्के हैं। एक पारी में सबसे ज्यादा छक्के का रिकॉर्ड बेंगलुरु के नाम है। उन्होंने 2013 में पुणे के खिलाफ कुल 21 छक्के लगाए थे। इस मैच में मयंक अग्रवाल को छोड़कर सनराइजर्स हैदराबाद के बाकी चारों बल्लेबाजों ने 50+ रन बनाए।

अभिषेक शर्मा का 16 बॉल में अर्धशतक

अभिषेक शर्मा ने 16 बॉल में अर्धशतक बना लिया है। वे हैदराबाद की ओर से सबसे तेज अर्धशतक जमाने वाले बैटर है। अभिषेक ने ट्रैविस हेड के 18 बॉल के रिकॉर्ड को तोड़ा है, जो हेड ने 22 मिनट पहले बनाया था।

मफाका सबसे महंगे गेंदबाज बने

मुंबई के लिए इस मैच में तेज गेंदबाज मफाका ने डेब्यू किया। दक्षिण अफ्रीका के इस युवा तेज गेंदबाज चार ओवर में 66 रन लुटाए। यह आईपीएल इतिहास का संयुक्त रूप से तीसरा सबसे महंगा बॉलिंग फिगर है। वहीं, आईपीएल डेब्यू पर यह सबसे महंगा बॉलिंग फिगर है। उन्होंने पंजाब किंग्स के माइकल नेसेर द्वारा 2013 में बेंगलुरु के खिलाफ बनाए गए रिकॉर्ड को तोड़ा। नेसेर ने 2013 में मोहाली में बेंगलुरु के खिलाफ अपने आईपीएल डेब्यू पर 62 रन खर्च किए थे और कोई विकेट नहीं लिया था।

स्कोर बोर्ड

सनराइजर्स हैदराबाद	रन	गेंद	4	6
मयंक कै. डेविड बो. हार्दिक	11	13	1	0
ट्रैविस हेड कै. नमन बो. कोएत्जी	62	24	9	3
अभिषेक शर्मा कै. नमन बो. चावला	63	23	3	7
एडन मारक्रम नाबाद	42	28	2	1
हाइनरिक क्लासन नाबाद	80	34	4	7

अतिरिक्त: 19, **कुल**: 20 ओवर में 3 विकेट पर 277 रन, **विकेट पतन**: 1-45, 2-113, 3-161, **गेंदबाजी**: वेना मफाका 4-0-66-0, हार्दिक पांड्या 4-0-46-1, जसप्रीत बुमराह 4-0-36-0, गेराल्ड कोएत्जी 4-0-57-1, पीयूष चावला 2-0-34-1, शम्स मुलानी 2-0-33-0.

मुंबई इंडियंस	रन	गेंद	4	6
रोहित शर्मा कै. अभिषेक बो. कमिंस	26	12	1	3
इशान किशन कै. बो. शाहबाज	34	13	2	4
नमन धीर कै. कमिंस बो. उनादकट	30	14	2	2
तिलक वर्मा कै. मयंक बो. कमिंस	64	34	2	6
हार्दिक कै. क्लासन बो. उनादकट	24	20	1	1
टिम डेविड नाबाद	42	22	2	3
रोमारियो शेफर्ड नाबाद	15	6	2	1

अतिरिक्त: 11, **कुल**: 20 ओवर में 5 विकेट पर 246 रन, **विकेट पतन**: 1-56, 2-66, 3-150, 4-182, 5-224, **गेंदबाजी**: भुवनेश्वर कुमार 3-0-53-0, जयदेव उनादकट 4-0-47-2, शाहबाज अहमद 3-0-39-1, पैट कमिंस 4-0-35-2, उमरान मलिक 1-0-15-0, मयंक मार्कंडेय 4-0-52-0.

आईपीएल में सबसे बड़ा टीम स्कोर

स्कोर	टीम	विरुद्ध	वर्ष
277/3	हैदराबाद	मुंबई	2024
263/5	बेंगलुरु	पुणे	2013
257/5	लखनऊ	पंजाब	2023
248/3	बेंगलुरु	गुजरात	2016
246/5	चेन्नई	राजस्थान	2010

आईपीएल के एक पारी में छक्के

छक्के	टीम	विरुद्ध	वर्ष
21	बेंगलुरु	पुणे	2013
20	बेंगलुरु	गुजरात	2016
20	दिल्ली	गुजरात	2017
18	बेंगलुरु	पंजाब	2015
18	राजस्थान	पंजाब	2020
18	चेन्नई	कोलकाता	2023
18	हैदराबाद	मुम्बई	2024

विमेंस एशिया कप में भारत पाक मैच 21 जुलाई को

भारत-नेपाल के बीच होगा ओपनिंग मैच, 8 टीमों को 2 ग्रुप में बांटा

नई दिल्ली।

एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) ने विमेंस एशिया कप का शेड्यूल घोषित कर दिया है। टूर्नामेंट 19 से 28 जुलाई तक श्रीलंका के दम्बुला शहर में खेला जाएगा। भारत और पाकिस्तान एक ही ग्रुप में हैं और दोनों के बीच ब्लॉकबस्टर मुकाबला 21 जुलाई को होगा। विमेंस एशिया कप के ठीक बाद सितंबर में विमेंस टी-20 वर्ल्डकप भी होना है। जिसका वेन्यू बांग्लादेश है। ऐसे में आईसीसी टूर्नामेंट से ठीक पहले एशियन टीमों के लिए एशिया कप ही तैयारी का आखिरी मौका रहेगा।

2022 में पिछला एशिया कप बांग्लादेश में खेला गया। इस दौरान 7 टीमों ने हिस्सा लिया और हर टीम ने एक-दूसरे के खिलाफ 6 मैच खेले। इस बार एक टीम बढ़ाकर टूर्नामेंट में 8 टीमें कर दी गईं। सबसे सफल टीम भारत के अलावा टूर्नामेंट में 2018 की चैंपियन बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, थाईलैंड, मलेशिया और यूएई भी हैं। 19 जुलाई को टूर्नामेंट का ओपनिंग मैच भारत और नेपाल के बीच होगा। इसी दिन पाकिस्तान का सामना यूएई से होगा। चारों टीमें ग्रुप-ए में हैं। वहीं श्रीलंका, बांग्लादेश, मलेशिया और थाईलैंड ग्रुप-बी में हैं। दोनों ग्रुप की 2-2 टॉप टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी।

दोनों नॉकआउट मुकाबले 26 जुलाई को होंगे, यहां जीतने वाली टीमों के बीच 28 जुलाई को फाइनल होगा। एसीसी ने विमेंस एशिया कप की शुरुआत 2004 में की। तब से 8 बार टूर्नामेंट खेला गया। 7 बार भारत और एक बार बांग्लादेश ने खिताब जीता। 2008 तक 4 बार टूर्नामेंट वनडे फॉर्मेट में खेला गया, हर बार भारत ने ट्रॉफी जीती। 2012 में टी-20 विमेंस एशिया कप की शुरुआत हुई। 2012 के बाद 2016, 2018 और 2022 में 4 बार टूर्नामेंट खेला गया। 3 बार इंडिया विमेंस टीम चैंपियन बनी, वहीं 2018 में एक बार बांग्लादेश ने भारत को ही हराकर खिताब जीता। 2022 में भारत ने श्रीलंका को फाइनल में हराकर आखिरी बार ट्रॉफी जीती थी।

शेड्यूल घोषित, टूर्नामेंट 19 से 28 जुलाई तक श्रीलंका में, सितंबर में होना है महिला टी-20 वर्ल्डकप

वर्ल्डकप में आखिरी बार भिड़ी थीं दोनों टीमें

भारत और पाकिस्तान के बीच विमेंस टी-20 फॉर्मेट में 14 मुकाबले खेले गए। 11 में भारत और महज 3 में पाकिस्तान को जीत मिली। दोनों के बीच आखिरी मुकाबला टी-20 वर्ल्डकप दौरान फरवरी 2023 में केपटाउन के मैदान पर हुआ था, इसे भारत ने 7 विकेट से जीता। एशिया कप में दोनों के बीच आखिरी मैच 2022 में हुआ था, तब पाकिस्तान को 13 रन से जीत मिली थी।

टूर्नामेंट का कार्यक्रम

19 जुलाई : पाकिस्तान बनाम नेपाल
भारत बनाम यूएई
20 जुलाई : मलेशिया बनाम थाईलैंड
श्रीलंका बनाम बांग्लादेश
21 जुलाई : नेपाल बनाम यूएई
भारत बनाम पाकिस्तान
22 जुलाई : श्रीलंका बनाम मलेशिया
बांग्लादेश बनाम थाईलैंड
23 जुलाई : पाकिस्तान बनाम यूएई
भारत बनाम नेपाल
24 जुलाई: बांग्लादेश बनाम मलेशिया
श्रीलंका बनाम थाईलैंड
26 जुलाई: 2 सेमीफाइनल
28 जुलाई: फाइनल

शुभमन गिल पर लगा 12 लाख का जुर्माना

स्लो ओवर रेट के कारण मिली सजा

सनराइजर्स के लिए कुछ और मैच नहीं खेलेंगे हसरंगा

नई दिल्ली ।

गुजरात टाइटंस (जीटी) के कप्तान शुभमन गिल पर स्लो ओवर रेट के कारण 12 लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने यह जानकारी बुधवार को दी।

दूसरी तरफ वनिंदू हसरंगा सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के लिए कुछ और मैच नहीं खेल सकेंगे। वह कम से कम एक सप्ताह नहीं खेल सकेंगे। वह विदेश में अपना इलाज करा रहे हैं।

आईपीएल के इस सीजन के 7वें मैच में मंगलवार को गुजरात को चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। टीम के कप्तान शुभमन गिल पर स्लो ओवर रेट के कारण 12 लाख रुपए का जुर्माना लगाया।

हैदराबाद से अब तक नहीं जुड़े हसरंगा

श्रीलंका के स्टार लेग स्पिनर वनिंदू हसरंगा अभी तक हैदराबाद की टीम से नहीं जुड़े हैं। उनके कम से कम एक और सप्ताह तक उपलब्ध नहीं रहने की संभावना है। उनकी बाईं एड़ी का पुराना दर्द उभर आया है। इसे लेकर वह विदेश में डॉक्टरों से सलाह ले रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, श्रीलंका क्रिकेट के मेडिकल स्टाफ ने उनकी चोट की जांच की है। हसरंगा सनराइजर्स हैदराबाद टीम का हिस्सा हैं। वे बेस प्राइस 1.50 करोड़ रुपए में ही टीम से जुड़े थे।

आस्ट्रेलिया ने भारत-पाक द्विपक्षीय सीरीज की मेजबानी की पेशकश की

दोनों देशों के बीच आखिरी द्विपक्षीय सीरीज 2012-13 में खेली गई थी

नई दिल्ली। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने कहा है कि अगर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) भविष्य में द्विपक्षीय मुकाबले के लिए सहमत होते हैं तो वह मेजबानी के लिए तैयार हैं।

भारत और पाकिस्तान क्रिकेट टीम को टी20 विश्वकप के बाद ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है। जहां एक तरफ भारत 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होने वाली पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने के लिए यात्रा करेगा तो दूसरी तरफ पाकिस्तान की टीम तीन मैचों की वनडे और टी20 सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया की यात्रा करेगी। भारत और पाकिस्तान के बीच आखिरी द्विपक्षीय सीरीज 2012-13 में खेली गई थी और तब से दोनों टीमें एशिया कप या आईसीसी इवेंट्स में ही सिर्फ एक-दूसरे के खिलाफ खेलते हैं। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में भारत और पाकिस्तान के बीच 2022 टी20 विश्वकप मैच की मेगा सफलता के बाद, जहां 90,293 प्रशंसकों ने आखिरी गेंद तक एक थ्रिलर मैच देखा था, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया बेहद खुश है। उस मैच में विराट कोहली ने नाबाद 82 की एक ऐतिहासिक पारी खेली थी। सीए, मेलबर्न क्रिकेट क्लब और विक्टोरियन सरकार ने अब एमसीजी में इन दो टीमों के बीच मुकाबले को लेकर रुचि व्यक्त की है, जो आर्थिक रूप से उन्हें मजबूत बना सकता है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के सीईओ निक हॉकले ने कहा कि अगर उन्हें मौका मिलता है तो उन्हें प्रतिष्ठित एमसीजी में भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय सीरीज की मेजबानी करने में खुशी होगी। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि जो भी यहां एमसीजी पर भारत-पाकिस्तान मैच के लिए आया है, वह उसे याद के तौर पर ले गया। इसलिए लोग उस मैच को देखना चाहते हैं। अगर मौका मिला तो हम इसकी मेजबानी करना पसंद करेंगे। अगर हम इन दो देशों के बीच सीरीज में कोई भूमिका निभा सकते हैं, तो हम एक भूमिका निभाना पसंद करेंगे। उन्होंने कहा, हम पाकिस्तान की मेजबानी करने को लेकर काफी रोमांचित हैं। हम भारत की मेजबानी करने को लेकर उत्साहित हैं। अगर हम मदद कर सकते हैं, तो यह बहुत अच्छा है। लेकिन मुझे लगता है कि कई मायनों में यह द्विपक्षीय सीरीज है।

मयंक चतुर्वेदी क्रिकेट अकादमी के विकास शर्मा का एनसीए कैम्प में हुआ चयन

भोपाल, खेप। मयंक चतुर्वेदी क्रिकेट अकादमी के विकेटकीपर बल्लेबाज विकास शर्मा का चयन बीसीसीआई द्वारा नेशनल क्रिकेट अकादमी (एनसीए) की इंडिया एफ टीम में किया गया है। विकास पिछले कई दिनों से विभिन्न क्रिकेट स्पर्धाओं में मध्यप्रदेश टीम से खेलते हुए बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे थे। विकास शर्मा के चयन पर बीडीसीए अध्यक्ष ध्रुव नारायण सिंह, चेयरमैन सैयद साजिद अली, रजत मोहन वर्मा, शांति कुमार जैन, सुशील सिंह ठाकुर, अविनाश पाठक, जुनेद किदवई, राजीव सक्सेना, अरविंद वर्मा, शैलेश शुक्ला, लखवीर सिंह गिल आदि ने बधाई व शुभकामनाएं दी हैं।

इंग्लैंड की महिला टीम ने न्यूजीलैंड को हराया

वेलिंगटन, (एजेंसी)। माया बूशेर की 56 गेंदों में 91 रनों की तूफानी पारी और शार्लेट डीन की 26 रन देकर चार विकेट की शानदार गेंदबाजी के दम पर इंग्लैंड की महिला टीम ने चौथे टी-20 मुकाबले में न्यूजीलैंड को 47 रनों से हरा दिया है। आज यहां बेसिन रिजर्व में 178 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी मेजबान न्यूजीलैंड की टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। इंग्लैंड की लॉरेन बेल ने सूजी बेट्स चार रन को आउट कर न्यूजीलैंड को पहला झटका दिया।

अप्रैल की चिलचिलाती गर्मी से बचने के लिए भारत की इन ठंडी जगहों पर घूमने जाएं

अप्रैल महीना ऐसा है जब पूरे देश में चिलचिलाती गर्मी शुरू हो जाती है। गर्मी से बचने के लिए लोग तरह-तरह के उपाय करते हैं। कोई बीच पर समुद्र में डुबकी लगाने पहुंचता है, तो कोई ठंडी जगहों पर घूमने का प्लान बनाते हैं। अगर आप भी गर्मी से बचना चाहते हैं तो किसी सुंदर और ठंडी जगह पर छुट्टियां बिताने जा सकते हैं। चलिए हम आपको इस लेख में भारत की कुछ ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहें, जहां आप अपने दोस्त, परिवार और पार्टनर के साथ हसीन पल को एन्जॉय कर सकते हैं।

डलहौजी- पहाड़ियों को सुंदर नजारा और सुकून के पल बिताने के लिए डलहौजी सबसे बेस्ट जगह है। समुद्र तल से करीब 2 हजार मीटर की ऊंचाई पर मौजूद डलहौजी भारत का सबसे खूबसूरत और मनमोहक हिल स्टेशन माना जाता है। यहां पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़, घने जंगल, झील-झरने और देवदार के पेड़ इस हिल स्टेशन की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं। अप्रैल के महीने में चिलचिलाती गर्मी में भी डलहौजी का तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। इसलिए यहां आप अप्रैल से लेकर जुलाई तक भारी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

हर्षिल वैली- उत्तराखंड की हसीन वादियों में मौजूद हर्षिल वैली किसी स्वर्ग से कम नहीं है। यह एक ऐसी वैली है, जिसे एक्सप्लोर करने का सबका सपना होता है। यहां पर लगभग हर देशी और विदेशी पर्यटक देखा है। समुद्र तल से करीब 9 हजार से भी अधिक फीट की ऊंचाई पर मौजूद हर्षिल वैली का तापमान अप्रैल के महीने में 9 डिग्री सेल्सियस से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। यहां पर आप ट्रेकिंग से लेकर यादगार फोटोग्राफी भी कर सकते हैं।

पहलगाम- अप्रैल की गर्मी से बचने के लिए ठंडी हवाओं का लुत्फ उठाने के लिए आप जम्मू कश्मीर के पहलगान एक ऐसी जगह है, जहां किसी भी मौसम में घूमने का अलग ही मजा है। यहां पर 5 डिग्री सेल्सियस से 7 डिग्री सेल्सियस के बीच तपमान रहता है। ठंडी हवाओं का मजा लेने के लिए देश के हर कोने से पर्यटक आते हैं। पहलगाम में आप तुलियन झील, शेषनाग झील, बीटा घाटी और मार्सर झील जैसी जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

गंगटोक- अप्रैल की भयानक गर्मी से बचने के लिए आप नॉर्थ ईस्ट इंडिया की किसी शानदार जगह को एक्सप्लोर कर सकते हैं। आप गंगटोक की हसीन वादियों में घूमने के लिए पहुंच जाना चाहिए। हिमालय की गोद में मौजूद इसे नॉर्थ ईस्ट इंडियां का सबसे ठंडा प्रदेश भी माना जाता है।

विवाद शाहिद अफरीदी बोले- अगर आपने किसी को कप्तान नियुक्त किया है, तो उसे समय भी दें

पाक क्रिकेट में ड्रामा, कप्तानी से हटाए जाएंगे अफरीदी के दामाद

● नई दिल्ली/

पाकिस्तान क्रिकेट में एक बार फिर से कप्तान को लेकर ड्रामा जारी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) शाहीन अफरीदी को टी-20 कप्तानी से और शान मसूद को टेस्ट कप्तानी से हटाने पर विचार कर रहा है। साथ ही बाबर आजम को एक बार फिर से तीनों प्रारूप की कप्तानी सौंपने पर विचार किया जा रहा है। बाबर ने लगभग चार महीने पहले ही कप्तानी छोड़ी थी और नया कप्तान बना था। अब फिर से कप्तान बदलने के पीसीबी के विचार पर पाकिस्तान के पूर्व कप्तान शाहिद अफरीदी भड़क गए हैं। शाहीन शाहिद अफरीदी के दामाद हैं। शाहिद अपने दामाद शाहीन के बचाव में उतर आए हैं। अफरीदी ने मीडिया से कहा, मुझे लगता है कि अगर आपने किसी को कप्तान (शाहीन) नियुक्त किया है और उसे जिम्मेदारी दी है तो उसे भी समय दें। हमारे क्रिकेट की सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब भी बोर्ड में चेहरे बदलते हैं तो हमारे सिस्टम में बदलाव आ जाता है। जो भी आता है वह सोचता है कि वह जो भी कर रहा है वह पाकिस्तान क्रिकेट के लिए सर्वश्रेष्ठ है। अफरीदी ने कहा कि शाहीन को खुद को साबित करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, अगर आप कप्तान बदलते हो तो या तो उसे नियुक्त करने का फैसला गलत था या अब उसे बदलने का फैसला गलत है। शाहीन को पिछले साल वनडे विश्वकप के बाद टी-20 कप्तान नियुक्त किया गया था। वहीं, शान मसूद टेस्ट कप्तान बने थे। किसी को वनडे की कप्तानी नहीं सौंपी गई थी।

पाकिस्तान को हाईप्रोफाइल विदेशी कोच चाहिए

हालांकि, अब उन्हें फिर से कप्तान बनाया जा सकता है। इतना ही नहीं, टी-20 विश्वकप से पहले पाकिस्तान के दो पूर्व क्रिकेटर इमाद वसीम और मोहम्मद आमिर भी संन्यास से लौट आए हैं और टी20 विश्वकप के लिए खुद को उपलब्ध बताया है। ऐसे में पाकिस्तान में क्रिकेट में भूचाल आया हुआ है। अफरीदी ने विदेशी कोच की नियुक्ति का समर्थन किया, लेकिन कहा कि उन्हें एंडी फ्लावर की तरह हाईप्रोफाइल व्यक्ति होना चाहिए जिनका ट्रैक रिकॉर्ड काफी अच्छा है। उन्होंने कहा, मेरा मानना है कि अगर आप विदेशी कोच लाते हैं तो उसके तहत स्टाफ पाकिस्तानी होना चाहिए ताकि हमारे लोग भी आगे बढ़ सकें और अपने स्किल में सुधार कर सकें। इमाद वसीम और मोहम्मद आमिर को राष्ट्रीय अभ्यास शिविर में शामिल करने के फैसले के बारे में पूछने पर अफरीदी ने कहा कि पहले उनकी फिटनेस का आकलन करना बेहतर होता। उन्होंने कहा, लेकिन मैं आपको बता सकता हूं कि अगर वे काकुल में दो सप्ताह के प्रशिक्षण शिविर से निकल आते हैं तो वह सुपरमैन होंगे।

आमिर ने किया शाहीन अफरीदी का समर्थन

2020 के बाद संन्यास से वापसी करने वाले आमिर ने टी20 कप्तान के रूप में शाहीन का भी समर्थन किया है। उन्होंने ट्वीट किया, शाहीन बुरा नहीं है और मुझे लगता है कि उसे अपनी साख साबित करने के लिए समय दिया जाना चाहिए। टी20 विश्वकप का आगाज एक जून से होने जा रहा है। भारत और पाकिस्तान नौ जून को भिड़ेंगे।

'वॉर्म मून'

क्या यह अब भी वसंत की शुरुआत का प्रतीक है?

लंकाशायर (द कन्वरसेशन)। उत्तरी गोलार्ध में सर्दियों की अंतिम पूर्णिमा का चंद्रमा जिसे वॉर्म मून कहा जाता है 25 मार्च को दिखाई दिया। इसका नाम मूल अमेरिकियों के कारण पड़ा, जो जाती सर्दियों में मिट्टी पर केंचुओं के रेंगने से बने निशान से सर्दियों के अंत का जश्न मनाते थे। पूर्णिमा के सामान्य नाम आमतौर पर मौसमी जानवरों, रंगों या फसलों से आते हैः वुल्फ मून, पिक मून, हार्वेस्ट मून। लेकिन वॉर्म मून अपना महत्व खो रहा है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया के अधिकांश हिस्सों में गर्मियां बढ़ रही है और सर्दियां कम हो रही है। इस रिपोर्ट का लेखक तीन दशकों से अधिक समय से केंचुआ वैज्ञानिक है, उसने हाल ही में, मै उन महीनों में सतह पर कीड़ों के लक्षण देखे हैं जब वे निष्क्रिय हुआ करते थे।

यह पता लगाने के लिए कि वॉर्म मून कैसे बदल रहा है, लेखक एक विशेष केंचुए की प्रजाति (लुम्ब्रिकस टेरेस्ट्रिस, उर्फ द ड्यू वॉर्म , नाइटक्रॉलर या लोब वॉर्म) पर नजर रखता है। जिसे ट्रैक करना असामान्य रूप से

आसान है। कभी-कभी इसे सामान्य केंचुआ भी कहा जाता है, यदि आपको बगीचे में कोई बड़ा वॉर्म दिखाई देता है, तो संभावना है कि यह इसी प्रजाति का वॉर्म है। अधिकांश वॉर्म अपना अधिकांश जीवन भूमिगत बिताते है, लेकिन ओस का वॉर्म अपनी गहरी बिल को लगभग पूरी तरह से छोड़ देता है, अपने निशान अंदर छोड़ देता है, क्योंकि यह मृत पत्तियों को खाने के लिए हर रात मिट्टी की सतह पर निकलता है।

ये कीड़े मिट्टी की सतह पर भी परस्पर मिलाप करते है। वे उभयलिंगी (नर और मादा दोनों) हो सकते है लेकिन फिर भी उन्हें एक साथी के साथ शुक्राणु का आदान-प्रदान करने की आवश्यकता होती है - प्रत्येक दूसरे को निषेचित करता है।

ऐसी गतिविधियाँ आमतौर पर पक्षियों और दिन के संभावित शिकारियों से बचने के लिए अंधेरे की आड़ में होती है। हालाँकि, कीड़े बिल के शीर्ष पर मिट्टी की स्थिति के कारण सतह के नीचे रहते है। यदि मिट्टी सूखी (गर्मियों में) या जमी हुई (सर्दियों में) हो तो वे सतह पर नही आ सकते। सिद्धांत रूप में, सर्दियों के बीतने से सतह की गतिविधि फिर शुरू हो जाएगी। फिर भी यदि सर्दी इतनी ठंडी नही है, तो इस बात पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है कि किस चंद्रमा को 'वॉर्म मून' कहा जाना चाहिए। हो सकता है कि वर्ष के पहले की कोई तारीख बेहतर हो, या शायद इस शब्द का कोई वास्तविक अर्थ न रह जाए। फिनलैंड जैसी सबसे उत्तरी आबादी को देखकर इस बात का अंदाजा लगा सकते है कि ये केंचुए बदलती परिस्थितियों के अनुकूल कैसे ढल सकते है, जो गर्मियों में 24 घंटे दिन के उजाले के संपर्क में रहते है।

आफ़िस का लंच

ब्रिस्टल (द कन्वरसेशन)। यह सैडविच कैसा है? अगर आप किसी सुपरमार्केट में मील डील का आनंद लेते हुए ऐसा सोच रहे है, तो शायद मै भी ऐसा ही कर रहा हूँ।

ब्रितानी विशेष रूप से सैंडविच के प्रति अपने जुनून के लिए जाने जाते है, जिसे वे काम करते समय अकेले खाते है। यह आदत उनके यूरोपीय समकक्षों को कतई पसंद नही है। जैसा कि एक फ्रांसीसी विद्वान का कहना हैः 'कंप्यूटर स्क्रीन के सामने खाया गया सैंडविच या सलाद उचित भोजन नही माना जाता है।' शोध से पता चला है कि 28 प्रतिशत ब्रिटिश कर्मचारी अपने डेस्क पर खाना खाते है और 44 प्रतिशत अकेले दोपहर का भोजन करते है, जो यूरोप में सबसे अधिक है। समाजशास्त्रियों ने पारिवारिक भोजन, बच्चों के स्कूल भोजन और यहां तक कि रेस्तरां में भोजन करने पर भी गहन शोध किया है। केवल कुछ ही प्रकाशन दफ्तर में काम के दौरान दोपहर के भोजन पर ध्यान केंद्रित करते है, लेकिन अध्ययनों में लगभग विशेष रूप से बड़े पैमाने के सर्वेक्षणों का उपयोग किया गया है। हालाँकि ये व्यवहार के पैटर्न और हमारे खाने के तरीके के रुझान को प्रकट करने में उपयोगी है, लेकिन ये हमें यह समझने में मदद नही करते है कि लोग दोपहर के भोजन के समय सैंडविच क्यों खाते है। इसके लिए समृद्ध, गहन साक्षात्कार डेटा की आवश्यकता होती है। हाल ही में प्रकाशित एक शोध में, शोधार्थी ने 21 लोगों का साक्षात्कार लिया कि उन्होंने कार्यदिवस के दोपहर के भोजन में क्या खाया (और कहाँ और किसके साथ)। एकल 'अल डेस्को' सैंडविच की तुलना में कार्यदिवस के दोपहर के भोजन में बहुत अधिक विविधता मिली। लेकिन प्रतिभागियों के बीच इस बारे में साझा समझ थी कि काम पर दोपहर का भोजन कैसे किया जाए।

अधिकांश प्रतिभागी यह स्वीकार करने को तैयार थे कि कार्यदिवस का दोपहर का भोजन वास्तव में एक प्रीमियम गैस्ट्रोनॉमिक अनुभव नहीं था। एक व्यक्ति ने दोपहर के भोजन को 'मेरी कामकाजी खाने की चीज़' के रूप में वर्णित किया। फिर भी, अध्ययन में पाया गया कि लोग अपने दोपहर के भोजन का बहुत इंतजार करते थे, वह इसे सुबह के समय किए गए काम के इनाम या दावत के रूप में देखते थे, और ऐसा मानते थे कि यह उनकी पसंद का खाना खाने का समय है। एक प्रतिभागी, एक शिक्षिका, ने कबूल किया कि उसने कैंटीन से 'कार्बोहाइड्रेट के साथ कार्ब्स' और कस्टर्ड के साथ एक कुकी खाई। पारिवारिक रात्रिभोज के विपरीत, जहां हर कोई एक जैसा भोजन करता है और रसोइए को दूसरों के स्वाद का ध्यान रखना होता है, कार्यदिवस के दोपहर के भोजन को दूसरों की नापसंदगी के बावजूद, व्यक्तिगत भोजन आनंद के अवसर के रूप में देखा जाता था। अन्य परिस्थितियों में अस्वीकार्य माने जाने वाले खाद्य पदार्थ (उदाहरण के लिए डिब्बाबंद सूप या माइक्रोवेव भोजन) कार्यदिवस के दोपहर के भोजन के लिए स्वीकार्य रूप से सुविधाजनक होते है क्योंकि वे सुगम होते है। जिन जोड़ों से साक्षात्कार लिया गया, उन्होंने दोपहर के भोजन के अपने खराब विकल्पों के लिए एक-दूसरे का मजाक उड़ाया।

कुशल खान-पान मेरे प्रतिभागियों ने पैदल चलना और भोजन का इंतज़ार करना समय की बर्बादी माना। लोगों ने बताया कि वे ऊंघने और दोपहर का भोजन खरीदने के लिए कार्य अवकाश का उपयोग करते है, लेकिन काम से दूर रहने के समय को कम करने के लिए, वे अपने डेस्क पर ही खाना खाते है। भोजन मिलने के स्थान निकटता और वहां प्रदान की जाने वाली सेवा की गति यह तय करने वाले कारक है कि दोपहर के भोजन के लिए कहाँ खाना चाहिएः आप बस 'जाना, खाना और निकलना' चाहते है।

हालांकि यह प्रतिभागियों के बीच आम नहीं था, लेकिन घर से भोजन लाना उत्कृष्ट माना गया, वस्तुतः ब्रितानियों को यह पसंद नही है। जहां तक भोजन करने वाले साथियों का सवाल है, प्रतिभागियों के बीच मिश्रित भावनाएँ थी। सहकर्मियों के साथ भोजन करना हंसी-मज़ाक के साथ-साथ हल्के-फुल्के ब्रिटिश मज़ाक और सप्ताहांत की योजनाओं पर चर्चा का आनंद भी हो सकता है। हालाँकि, कभी-कभी, एक अच्छा वार्तालाप भागीदार होना और सहकर्मियों के साथ मैत्रीपूर्ण और पेशेवर के बीच धुंधली रेखा को पार करना केवल अधिक काम के रूप में देखा जाता था। दूसरों के साथ खाने के भावनात्मक प्रयास से बचने के लिए, लोग अपने सहकर्मियों को ऐसा संकेत देते है कि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए और वह अकेले बैठकर अपने फोन पर स्क्रॉल करके, कंप्यूटर स्क्रीन के पीछे छिपकर या यहां तक कि खड़ी कार की ओट में बिना किसी बाधा के अपना दोपहर का भोजन करते है। एक महिला ने संक्षेप में कहाः 'अन्य लोगों के साथ भोजन करना अपना ख्याल रखने के आनंद में हस्तक्षेप करता है'। दोपहर का भोजन और हमारा कामकाजी जीवन के निष्कर्ष बताते है कि ब्रिटिश दोपहर के भोजन की आदतें केवल भोजन के निम्न मानकों का मामला नही है। वे काम के दबाव और स्वयं की देखभाल करने और सामाजिक संपर्कों को प्रबंधित करने के साथ दक्षता की आवश्यकता को संतुलित करने के बारे में है। चुपचाप काम छोड़ने और महान इस्तीफे की तरह, दोपहर के भोजन में न्यूनतम प्रयास करने को कार्य संस्कृति की एक और प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जो अधिक मांग वाली होती जा रही है। ये साक्षात्कार कोविड महामारी से पहले आयोजित किए थे। हाइब्रिड और रिमोट वर्किंग में वृद्धि ने, कई लोगों के लिए, दोपहर के भोजन को कार्यालय से घर की ओर स्थानांतरित कर दिया है। व्यावसायिक सैंडविच व्यापार पर इसका भारी असर पड़ा है।

ब्रिटिश दफ्तरों में डेस्क पर पड़ा सैंडविच आपकी आदतों के बारे में कुछ कहता है

कृति सैनन

ने शाहीर शेख को दी जन्मदिन की शुभकामनाएं

मुंबई (आईएएनएस)। 'दो पत्ती' में दिखाई देने वाली एक्ट्रेस कृति सैनन ने फिल्म में अपने को-स्टार एक्टर शाहीर शेख को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं दी हैं। कृति ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर शाहीर के साथ फिल्म के सेट से एक तस्वीर शेयर की। तस्वीर में दोनों सेल्फी के लिए पोज देते हुए कैमरे की ओर देखकर मुस्कुरा रहे हैं। उन्होंने कैप्शन में लिखा, जन्मदिन मुबारक हो शाहीर शेख, आशा है कि इस साल आपको वह सब कुछ मिले जो आपका दिल चाहता है। मैं 'दो पत्ती' में लोगों द्वारा आपका जादू देखने का इंतजार नहीं कर सकती। शशांक चतुर्वेदी द्वारा निर्देशित इस मिस्ट्री थ्रिलर में काजोल और तन्वी आजमी भी हैं। यह उत्तर भारत की पहाड़ियों पर आधारित एक मनोरम कहानी बताती है।

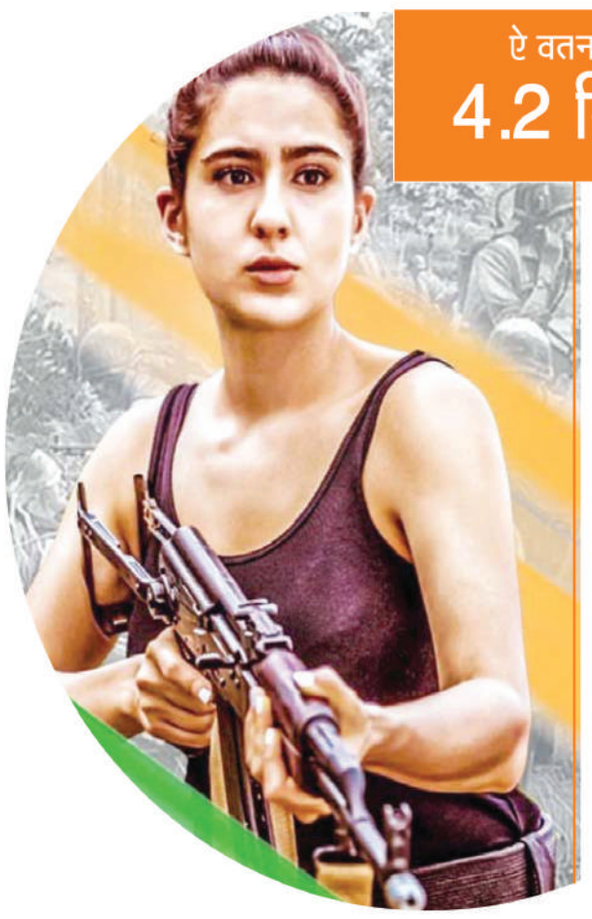

ऐ वतन मेरे वतन को मिले 4.2 मिलियन व्यूज

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली खान की फिल्म ऐ वतन मेरे वतन को 4.2 मिलियन व्यूज मिल गये है। करण जौहर के धर्मेटिक एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म 'ऐ वतन मेरे वतन' में सारा अली खान की मुख्य भूमिका है।यह फिल्म युवा भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उषा मेहता के जीवन पर आधारित है, जिन्होंने महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक भूमिगत रेडियो स्टेशन का संचालन किया था। इस फिल्म की तारीफ महात्मा गांधी के परपोते तुषार गांधी ने भी की है। वर्तमान में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले मौजूदा ओटीटी शो या फिल्म की बात करें तो ऐ वतन मेरे वतन दूसरे नंबर पर है। अमेजन प्राइम वीडियो पर इस फिल्म को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है, कन्नन अय्यर के निर्देशन में बनी ए वतन मेरे वतन में सारा अली खान के अलावा इमरान हाशमी ,सचिन खेडेकर, अभय वर्मा, स्पर्श श्रीवास्तव, एलेक्स ओ'नील और आनंद तिवारी भी है।

'कल्कि 2898 एडी' की कहानी ने सभी कलाकारों को प्रेरित किया

मुंबई (वार्ता)। फिल्म निर्माता स्वप्ना दत्त चलसानी का कहना है कि फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' की कहानी ने सभी कलाकारों को काम करने के लिये प्रेरित किया। नाग अश्विन निर्देशित विज्ञान कथा महाकाव्य 'कल्कि 2898 एडी' में अमिताभ बच्चन, कमल हासन, प्रभास, दीपिका पादुकोण और दिशा पटानी की अहम भूमिका है। 'कल्कि 2898 एडी की निर्माता स्वप्ना दत्त चलसानी ने कहा,मुझे लगता है कि यह वह कहानी है जिसने सभी कलाकारों को प्रेरित किया है। मुझे नहीं लगता कि उनमें से कोई भी इस बात से चिंतित था कि दूसरा व्यक्ति क्या कर रहा है। उन्होंने एक तरह से इस बात की बड़ी तस्वीर देखी कि हम सब फिल्म के लिए एक साथ क्या कर रहे थे। वैजयंती मूवीज निर्मित 'कल्कि 2898 एडी' एक पैन इंडिया फिल्म है। यह फिल्म 09 मई, 2024 को पूरे भारत में सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

इमरान और प्रतीक के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी

सई ताम्हणकर

मुंबई (आईएएनएस)। एक्ट्रेस सई ताम्हणकर 'ग्राउंड जीरो' और 'अग्नि' में एक्टर इमरान हाशमी और प्रतीक गांधी के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आएंगी। एक्ट्रेस ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि वह अपने जैसे लोगों के लिए दरवाजे खोल रही हैं जो अपने सपनों को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ एक बार फिर से काम करने को लेकर सई ने कहा, यह मेरे लिए बहुत ही शानदार एहसास है, क्योंकि एक्सेल एंटरटेनमेंट उन अग्रणी प्रोडक्शन हाउसों में से एक है जिसके साथ हर कोई काम करना चाहता है। मुझे उनके साथ तीन बार काम करने का मौका मिला, जिसमें 'डब्बा कार्टेल' भी शामिल है। अपने सह-कलाकारों के बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस ने इमरान हाशमी और प्रतीक गांधी की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि दोनों ही कलाकार अद्भुत हैं। एक्ट्रेस सई ने कहा, उनके साथ काम करने का सौभाग्य पाकर मैं दर्शकों को वह जादू दिखाने के लिए उत्साहित हूं जो हमने साथ मिलकर बनाया है।

सलमान को पसंद आया

'बड़े मिया छोटे मियां' का ट्रेलर

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान को अक्षय कुमार-टाइगर श्राफ की आने वाली फिल्म 'बड़े मिया छोटे मियां' का ट्रेलर बेहद पसंद आया है। ट्रेलर में अक्षय-टाइगर जबर्दस्त एक्शन करते नजर आए है। ट्रेलर को काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। सलमान ने ट्वीट करते हुए लिखा, 'बड़े मियां छोटे मियां' अक्की एंड टाइगर पिक्चर के लिए बेस्ट ऑफ लक। ये बहुत बड़ी हिट होगी। ट्रेलर बहुत बढ़िया है। अली अब्बास जफर इस बार टाइगर और सुल्तान का रिकॉर्ड तोड़ना है। उम्मीद है कि हिंदुस्तान को आप और आप को हिंदुस्तान ईदी देंगे। सलमान खान के इस ट्वीट पर 'बड़े मियां छोटे मियां' के निर्देशक अली अब्बास जफर ने जवाब दिया है. उन्होंने लिखा किः आप जैसा कोई भी नहीं है भाई. लव यू। बड़े मियां छोटे मियां को वासु भगनानी और जैकी भगनानी के प्रोडक्शन हाउस पूजा एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनाया जा रहा है।

भोजपुरी गीत 'भउजी रे फौजी चाही' रिलीज

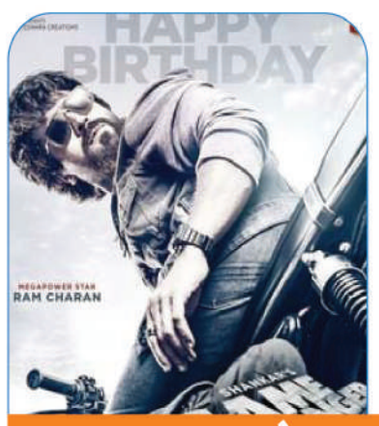

मुंबई (वार्ता)। गायिका शिवानी सिंह और अभिनेत्री माही श्रीवास्तव का भोजपुरी गीत 'भउजी रे फौजी चाही' रिलीज हो गया है। यह गीत वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल से रिलीज किया गया है। इस गाने को शिवानी सिंह ने गाया है जबकि माही श्रीवास्तव ने इसमें अभिनय किया है। गाने में माही श्रीवास्तव शादी करने के मूड में नजर आ रही है। वह अपनी भाभी से फौजी पति की डिमांड कर रही है। इस गाने की वीडियो में माही श्रीवास्तव अपनी भाभी से कहती है कि...'खाये का ना दाल भात भुजिया कलउजी चाही, समझ दरद हमर असली मरद हमर भउजी रे फौजी चाही...'गीत'भउजी रे फौजी चाही' के निर्माता रत्नाकर कुमार है।

रामचरण के जन्मदिन पर

गेमचेंजर का पहला गाना जारागंडी रिलीज

मुंबई (वार्ता)। दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार रामचरण के जन्मदिन के अवसर पर उनकी आने वाली फिल्म गेम चेंजर का पहला गाना जारागंडी रिलीज कर दिया गया है। फिल्म 'गेम चेंजर' में रामचरण के साथ कियारा आडवानी की मुख्य भूमिका है। 27 मार्च को राम चरण के जन्मदिन के अवसर पर फिल्म गेम चेंजर का पहले गाने 'जारागंडी' का लिरिकल वर्जन रिलीज कर दिया गया है। इस गाने का म्यूजिक एस थमन ने कम्पोज किया है, वहीं 'जारागंडी' गाने को दलेर मेहंदी और सुनिधि चौहान ने आवाज दी है। 'जारागंडी' गाना हिंदी, तेलुगु और तमिल,तीन भाषाओं में रिलीज किया गया है। इस गाने में कियारा आडवानी और राम चरण एक साथ थिरकते नजर आ रहे हैं।इस गाने को प्रभु देवा ने कोरियोग्राफ किया है।

बाहुबली पूर्व विधायक विजय मिश्र की 01 अरब 13 करोड़ की संपत्ति जब्त

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार विजय मिश्र को मिट्टी में मिलाने पर तुली, दिल्ली में 78 और प्रयागराज में 35 करोड़ से अधिक की तीन मंजिला मकान जब्त, विजय मिश्र का वह दौर भी था जब लोग उनके नाम से काँपते थे, जब मुलायम सिंह यादव विजय मिश्र को खुद अपने हेलीकाफ्टर में ले उड़े

प्रखर भदोही। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार पूर्वांचल एवं भदोही के पूर्व बाहुबली विधायक विजय मिश्र की नकेल ढिली करने के मूड में फिलहाल नहीं दिखती है। उनकी चल-अचल सम्पति को जब्त करने का सिलसिला जारी है। जिला मजिस्ट्रेट भदोही के आदेश पर नई दिल्ली और प्रयागराज में तीन बहुमंजिला इमारात को कुर्क किया गया है। जिसकी कुल अनुमानित कीमत 01 अरब 13 करोड़ 05 लाख रुपए बताई गईं है। पुलिस अधीक्षक डॉ मीनाक्षी कात्यान के अनुसार जिला मजिस्ट्रेट विशाल सिंह ने 15 मार्च को पूर्व बाहुबली विधायक विजय मिश्र की दिल्ली स्थित दो और प्रयागराज स्थित एक संपत्ति को कुर्क करने का आदेश दिया था। भदोही पुलिस ने दिल्ली और प्रयागराज पुलिस से संपर्क कर जिला मजिस्ट्रेट के आदेश पर तीनों संपत्तियों को कुर्क कर लिया हैं। भदोही पुलिस अधीक्षक के अनुसार जो संपत्तियां कुर्क की गयीं

हैं वह सभी आपराधिक कृत्यों के जरिए हासिल की गई थी। नई दिल्ली स्थित अपने बेटे विष्णु मिश्र, दामाद हरिशंकर मिश्र और बेटी सीमा मिश्र के नाम यह संपत्ति खरीदी थी। जिसकी कीमत 78 करोड़ रुपए हैं। जबकि जनपद प्रयागराज में साकेत अस्पताल के नाम से संचालित इमारत को भी कुर्क किया गया है। यह दामाद हरिशंकर मिश्रा के नाम बनवाया था। तीन मंजिला इमारत की कीमत 35 करोड़ 5 लाख है। पुलिस अधीक्षक डॉ मीनाक्षी के अनुसार बाहुबली पूर्व विधायक विजय मिश्रा के खिलाफ है गैंगस्टर एक्ट के कार्रवाई की गई है। उन्होंने आरोपित करते हुए बताया कि विजय मिश्रा पर हत्या, लूट, बलात्कार, मारपीट संपत्ति हड़पने, जालसाजी जैसे भदोही और दूसरे जनपदों में 83 अभियोग पंजीकृत है। विजय मिश्र गैंग लीडर का काम करते थे। भदोही पुलिस अधीक्षक के अनुसार नई दिल्ली स्थित कोपिया बिल्डिंग के द्वितीय तल को क्रय कर उसमें काफी पैसा खर्च करके साज-सज्जा व आधुनिक सुविधाओं से युक्त भवन बनाया गया था। जिसकी अनुमानित कीमत 70 करोड़ रुपए है। इसके अलावा आनंद लोक के प्रथम तल की अनुमानित कीमत 08 करोड़ रुपए बताया है। इसे पूर्व विधायक विजय मिश्र ने अपने सगे पुत्र विष्णु मिश्र के नाम से खरीदा था। जबकि अपने दामाद हरिशंकर मिश्र के नाम जनपद प्रयागराज स्थित बाघम्बरी गृह संस्थान योजना में आधुनिक सुविधाओं से युक्त तीन मंजिला भवन जिसकी अनुमानित कीमत 35 करोड़ 05 लाख रुपए है उसे खरीदा था। उसमें साकेत हॉस्पिटल संचालित कराया जा रहा है ताकि अपने अवैध धन को वैध बनाया जाय। भदोही पुलिस अधीक्षक ने बताया है कि विजय मिश्र के खिलाफ या कार्रवाई भविष्य में भी जारी रहेगी। पूर्वांचल के बाहुबली पूर्व विधायक विधायक का एक वह दौर भी था जब उनके आदेश के बगैर पत्ता भी नहीं हिलता था। लोग विजय मिश्र के नाम से थरार्ते और काँपते थे। पुलिस और अधिकारियों के लिए उनका नाम ही काफी था। यह वही विजय मिश्र थे जिन्हें उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं समाजवादी नेता मुलायम सिंह यादव भदोही में उपचुनाव के दौरान खुद अपने हेलीकॉप्टर पर बैठाकर उड़ गए थे। प्रदेश में उस समय मायावती का शासन था। विजय मिश्र को गिरफ्तार करने में लगी भदोही पुलिस हाथ मलती रह गई थी। वह इस समय बलात्कार एवं अन्य मामलों में जेल में बंद हैं। लेकिन समय के साथ विजय मिश्र की राजनीतिक हैसियत अर्श से फर्श पर आ गई। मुलायम सिंह के चहेते विजय मिश्र पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की निगाह टेढ़ी हो गई। कभी जो पुलिस और अफसर उनके यहाँ सलामी ठोकते थे अब उन्हीं के गले की हड्डी बन गए हैं।

आपसी लड़ाई में उलझा विपक्ष, प्रदेश की अस्सी सीटों पर जीतेगी भाजपा : स्वाती सिंह

लखनऊ। भारत के विकास के लिए दिन-रात एक करने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक तरफ विकास की बातें कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ विपक्ष आपसी झगड़े को निपटाने में जुटा हुआ है। यही नहीं वह कभी महिलाओं का अपमान कर रहा है तो कभी भारत विरोधी बयान दे रहा है। ऐसे में चुनाव परिणाम पहले से ही स्पष्ट है। उप्र में आपसी लड़ाई में उलझी सपा, जातिगत समीकरण भिड़ा रही बसपा और कांग्रेस शून्य पर सिमट जाएंगे। सभी 80 सीटों पर कमल खिलने जा रहा है। ये बातें भाजपा नेता व उत्तर प्रदेश सरकार की पूर्व मंत्री स्वाती सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि रामपुर और मुरादाबाद में सजा पा चुके आजम खां के आगे

अखिलेश यादव झुक गये। उन्हें अपने सीटिंग सासंद को टिकट देने के बाद पुनः वापस लेना पड़ा। सपा मुखिया पार्टी के अंदर चल रहे अंतरद्वद्व को समाप्त करने में ही पूरा समय गंवाना पड़ रहा है। वहीं दूसरी तरफ भाजपा कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों को भाजपा के जनहितकारी कामों को बहुत पहले ही समझा चुके हैं। आज चुनाव भाजपा नहीं लड़ रही है, बल्कि भाजपा की तरफ से हर एक आम आदमी खुद ही लड़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का चेहरा ही चुनाव में काफी है। स्वाती सिंह ने कहा कि बसपा सिर्फ जातिगत और धार्मिक आधार पर अपने कंडिडेट का चुनाव लड़ रही है। उसके पास न तो कोई विजन है और न ही उसका कोई उद्देश्य। उसका सिर्फ एक मात्र उद्देश्य है कि किसी तरह वह दो-चार सीटों पर जीत हासिल कर ले। इसे जनता भी जानती है। वहीं सपा की स्थिति यह है कि अलीगढ़ से 2009, 2014 और 2019 में चुनाव हार चुके बिजेन्द्र सिंह का टिकट देना पड़ा।

सड़क समस्या से निजात को सौंपा ज्ञापन किया मरम्मत की मांग

जखनियां गाजीपुर। सड़क समस्या से जूझते जखनियां के लोगों की समस्या कम होने का नाम नहीं ले रही। स्थानीय तहसील प्रशासन से लेकर जिला प्रशासन एवं प्रदेश के शासन सत्ता से जुड़े आलाकमान को समस्याओं से अवगत कराने के बावजूद कोई पुरसाहाल नहीं। क्षेत्र के फद्दूपुर से जखनियां होते हुए मनिहारी तक की सड़क की स्थिति तो यह है कि सड़क टूटकर पूरी तरह से गड्ढा में तब्दील हो गई है। जिसके चलते स्टेट बैंक शाखा से बाजार होते हुए रामबन गांव के धनरावती चिकित्सालय तक की जानलेवा सड़क कब बुरी खबर के साथ हंगामा खड़ा कर दे कहा नहीं जा सकता। उक्त खराब सड़क की मरम्मत के लिए सर्वदलीय संघर्ष समिति का प्रतिनिधिमंडल देवनारायण सिंह की अध्यक्षता में उपजिलाधिकारी कमलेश सिंह से मिलकर पत्रक सौंपा। गौरतलब हो कि ऐसा पत्रक एक नहीं कई बार

सौंपा जा चुका है। एक बार फिर सौंपे गए पत्रक में मांग किया गया कि भुड़कुड़ा कोतवाली मुख्यालय से रामबन गांव के 2 किलोमीटर तक की सड़क को बनवाया जाए। जिससे बाजार सहित जखनियां ब्लॉक, चिकित्सालय, रेलवे स्टेशन ब्लाक मुख्यालय ग्राम न्यायालय कोतवाली मुख्य पोस्ट आफिस एवं बैंक सहित कई छोटे बड़े विद्यालयों तक आने-जाने में आमजन को सहूलियत का अहसास हो। बताया कि सड़क बनाने के लिए लोक निर्माण विभाग के जेई सुभाष को भी जानकारी दी गई है। जिस पर उन्होंने गड्ढों में सिर्फ पत्थर की गिट्टी व मिट्टी डालने की बात कही। बताया कि सड़क बनाने के लिए लोक निर्माण विभाग को ईस्टीमेट बनाकर भेजा गया था, लेकिन वो अभी तक स्वीकृत नहीं हुआ है। इस मौके पर रामजी गिरी, अखिलानंद सिंह, सवार्नंद चौबे, अरुण कुमार लाल, अमित पांडेय, रामसूरत कुशवाहा, मोहन राजभर आदि रहे।

संत अतुलानंद कॉन्वेंट स्कूल कोइराजपुर में मधुरंग कवि सम्मेलन हास्य, व्यंग्य और यथार्थ को सहेजता मुखर हो उठा

वाराणसी। संत अतुलानंद कॉन्वेंट स्कूल कोइराजपुर हरहुआ वाराणसी के इंद्रधनुष सभागार के मंच पर होली के उपलक्ष्य में एक बार फिर मधुरंग कवि सम्मेलन हास्य,व्यंग्य और यथार्थ को सहेजता मुखर हो उठा` कविताओं से सजा काव्य मंच वर्तमान के लोकप्रिय एवं बहुचर्चित कवियों के आगमन से खिल उठा इस विशेष कार्यक्रम में वाराणसी के विशिष्ट गणमान्य जन एवं अभिभावक उपस्थित हुए। संस्था सचिव राहुल सिंह ने सभा में पधारे कवि मण्डल के साथ-साथ सभी विशिष्ट जन का हृदय से स्वागत एवं अभिनंदन किया` कार्यक्रम के आरम्भ में विद्यालय के पारंपरिक कुलगीत की प्रस्तुति हुई इसके पश्चात मनमोहक होली गीत ह्यखेले मसाने में होलीह्ल की भावपूर्ण प्रस्तुति तथा नयनाभिराम समूह नृत्य प्रस्तुति ने सभागार में होली की जीवंत ऊर्जा को सजीव कर दिया` साहस,शौर्य एवं हास्य से परिपूर्ण इस काव्यमंच

का संचालन प्रख्यात कवि डॉ.गजेंद्र सिंह सोलंकी ने अपने विशिष्ट अंदाज में किया` शशिकांत यादव की काव्य प्रस्तुति में जहां शौर्य एवं वीरता का स्वर सुनायी दिया वहीं डॉ.अनिल चौबे के चुटीले हास्य व्यंग्यों ने खूब वाह-वाही बटोरी, वरिष्ठ कवि डॉ.बुद्धिनाथ मिश्र की कविताएं साहित्य के अप्रतिम आनंद का स्रोत बनीं। वाराणसी के युवा कवि सूरज मणि की कविताओं ने काव्य के क्षितिज पर सूर्य की भाँति ही तेज उकेरा` डॉ.भुवनमोहिनी ने यथा नाम तथा गुण को परिलक्षित करते हुए अपनी कविताओं से सबका मन मोह लिया` कार्यक्रम में विधान परिषद सदस्य धर्मेन्द्र सिंह, डॉ. रामसुधार सिंह, विनोद राय,हरेंद्र राय , हरिहर चौबे,संतोष सिंह तथा पवन कुमार सिंह जैसे विशिष्ट जन उपस्थित थे। संस्था की निदेशिका डॉ. वंदना सिंह,सह निदेशक आयुष्मान सिंह एवं प्रधानाचार्या डॉ.नीलम सिंह ने सभा में उपस्थित सभी अभ्यागतों के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया एवं होली की हार्दिक शुभकामना प्रदान की।

हम टीबी खत्म कर सकते हैं की थीम पर मनाया गया विश्व क्षय रोग दिवस

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय सभागार में बृहस्पतिवार को सीएमओ डॉ देश दीपक पाल की अध्यक्षता में विश्व क्षय रोग दिवस पर गोष्ठी और हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया। होली के अवसर पर बीते दिनों अवकाश होने के कारण राज्य स्तर से प्राप्त दिशा निर्देश के क्रम में 24 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व क्षय रोग दिवस इस बार बृहस्पतिवार 28 मार्च को मनाया गया। गोष्ठी में सीएमओ डा0 पाल ने कहा कि सामूहिक प्रयास से हम टीबी को वर्ष 2025 तक पूरी तरह से खत्म कर सकते हैं। इसलिए इस वर्ष विश्व क्षय रोग दिवस की थीम हाँ! हम टीबी खत्म कर सकते हैं रखी गई है। वर्ष 2025 तक ग्राम पंचायत, जनपद, प्रदेश, व भारत को टीबी मुक्त बनाने के लिए हम सभी को आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि ओपीडी में आने वाले टीबी के लक्षण युक्त रोगियों की टीबी जांच अवश्य कराई जाए। प्रतिदिन ओपीडी में आने वाले रोगियों में से पांच प्रतिशत और एकीकृत निक्षय दिवस के मौके पर हर माह की 15 तारीख को ओपीडी के 10 प्रतिशत रोगियों की स्पुटम जांच अवश्य हो। जांच में क्षय रोग की पुष्टि होने पर शत-प्रतिशत नोटिफिकेशन कराया जाए। सभी रोगियों को गोद लेने के प्रयास किए जाएं। इसके साथ ही उन्होंने सभी क्षय रोगियों की एचआईवी, शुगर, स्पुटम और एक्सरे जांच कराने के साथ ही फेफड़ों की टीबी वाले सभी रोगियों की जांच सीबीनॉट से कराने की बात भी कही। उन्होंने कहा कि अन्य अंगों की टीबी में भी फ्लूड लेकर सीबीनॉट जांच कराई जाए, इससे टीबी के प्रकार की पहचान और सटीक उपचार देने में मदद मिलती है। जिला

क्षय रोग अधिकारी डॉ संजय कुमार ने कहा कि विश्व क्षय रोग दिवस के आयोजन का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों तक टीबी के बारे में जानकारी पहुंचाना है। टीबी से बचाव के लिए जागरूकता जरूरी है। जन समुदाय को यह भी जानना जरूरी है कि टीबी एक गंभीर रोग है, लापरवाही करने पर यह जानलेवा हो सकता है, यह रोग असाध्य नहीं है। यानि समय से जांच कराकर उपचार कराया जाए तो टीबी पूरी तरह ठीक हो जाती है। टीबी किसी तरह का कलंक भी नहीं है, इसलिए इसे छिपाने की भी जरूरत नहीं है। जिला कार्यक्रम समन्वयक डॉ मिथलेश कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम व निःक्षय पोषण योजना के अन्तर्गत पंजीकृत क्षय रोगियों को पोषण के लिए डीबीटी के माध्यम से प्रतिमाह 500 रुपए की सहायता इलाज पूर्ण होने तक प्रदान की जा रही है। इस सुविधा का लाभ पाने हेतु रोगी को अपना बैंक खाता संख्य कराना अनिवार्य है। टीबी की आधुनिक जाँच एवं उपचार की सुविधा समस्त राजकीय चिकित्सा इकाईयों व आयुष्मान आरोग्य मंदिरों पर उपलब्ध है। इसके साथ ही प्रत्येक माह की 15 तारीख को एकीकृत निःक्षय दिवस पर टीबी के मरीजों के लिए जाँच एवं उपचार की व्यवस्था प्रदान की जा रही है। प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत निःक्षय मित्र बने और टीबी रोगियों की सहायता करें। कोई भी व्यक्ति निःक्षय मित्र बन सकता है। इस मौके पर एसीएमओ डॉ मनोज कुमार, जिला पीपीएम समन्वयक अनुराग कुमार पाण्डेय, एसटीएस, एसटीएलएस एवं एनटीईपी के अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित रहे।

2 करोड़ की हेरोइन सहित तस्करों के ठेकेदार व हिस्ट्रीशीटर सहित तीन अभियुक्त गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक नगर के कुशल मार्गदर्शन व क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण में गुरुवार को स्वाट व सर्विलांस व थाना कोतवाली पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा अन्तर्राज्यीय मादक पदार्थ हेरोइन की अवैध तस्करी करने वाले गिरोह के 03 अभियुक्तों को 01 किलो मादक पदार्थ हेरोइन जिसकी अन्तर्राष्ट्रीय कीमत 02 करोड़ रुपए है के साथ रंगे हाथ हेतिमपुर मोड़ के पास से समय करीब 09.10 बजे गिरफ्तार किया गया। हेरोइन की अवैध तस्करी करने वाले अभियुक्तगणों के विरूद्ध अभियोग पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। पूछताछ के दौरान हिरासत में लिए गए व्यक्तियों द्वारा बताया गया कि हम लोग 01 साल से हेरोइन तस्करी के धंधे में संलिप्त हैं। अधिक पैसा कमाने के लालच में हम लोग झारखण्ड के चतरा जाकर कम दाम पर हेरोइन को खरीदकर उसे बनारस व राजस्थान के कोटा आदि स्थानों पर ऊँचे दामों पर विक्रय कर मिलने वाले पैसों को आपस में बाँट लेते हैं और उसी पैसे से अपने परिवार का भरण-पोषण व अपने शौक पूरे करते हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों में बजरंगी सिंह यादव पुत्र स्व0 अंगद सिंह यादव निवासी बिराइच थाना जंगीपुर जनपद गाजीपुर उम्र करीब 34 वर्ष, महेन्द्र यादव पुत्र स्व0 जगधारी यादव निवासी महुलिया थाना सैदपुर जनपद गाजीपुर उम्र करीब 55 वर्ष, राम आशीष सिंह यादव पुत्र दुखन्ती यादव निवासी जगदीशपुर थाना जमानिया जनपद गाजीपुर उम्र करीब 30 वर्ष रहें। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में प्रभारी स्वाट/सर्विलांस मय टीम जनपद गाजीपुर तथा प्रभारी निरीक्षक थाना कोतवाली मय टीम जनपद गाजीपुर शामिल रहे।

भक्तों के आगमन के साथ ही 'बाबा विश्वनाथ' की आय में हुई रिकॉर्ड वृद्धि

प्रखर वाराणसी। श्री काशी विश्वनाथ धाम में श्रद्धालुओं का रिकॉर्डतोड़ आगमन हो रहा है। इससे काशी पुराधिपति 'बाबा विश्वनाथ' की आय में भी रिकॉर्ड वृद्धि हो रही है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के मुकाबले 2022-23 की आय में लगभग 200 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वहीं वर्ष 2022 और 2023 में लगभग 13 करोड़ दर्शनार्थियों ने बाबा के दर पर शीश नवाया। काशी का विकास, विश्वनाथ धाम का विस्तार और देश - दुनिया से वाराणसी की अच्छी कनेक्टिविटी के कारण यहां पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। लोकार्पण के बाद से ही श्रद्धालुओं का मंदिर में जन सैलाब उमड़ रहा है। काशी में बढ़ रहे पर्यटकों के कारण पर्यटन उद्योग समेत अन्य व्यवसाय भी आसमां छू रहे हैं। काशी में उत्तरवाहिनी गंगा के किनारे विराजमान देवाधिपति महादेव का दर्शन कर दुनिया भर के सनातनी उनका आशीष लेना चाहते हैं। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास के मुख्य कार्यपालक अधिकारी विश्वभूषण मिश्र ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2022-23 में श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर न्यास में अभी तक का सबसे ज्यादा चढ़ावा चढ़ा है। यह राशि 58.51 करोड़ से अधिक है। पिछले वित्तीय वर्ष के मुकाबले इस वित्तीय वर्ष की आय में लगभग 191 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसमें कई मूल्यवान वस्तुएं भी शामिल हैं। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के दिव्य और भव्य होने के साथ ही काशी की कनेक्टिविटी पूरी दुनिया से अच्छी हुई है, जिससे दुनिया के हर कोने से काशी पहुंचना बेहद आसान हो गया है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने बताया कि पिछले दो वर्षों में 12, 84,57314 श्रद्धालुओं ने दर्शन किया है। वर्ष 2022 में 7,11,47,210 और वर्ष 2023 में 5,73,10,104 शिव भक्तों ने आदि योगी का दर्शन किया। तंग गलियों और गंदगी की अपने पहचान को मिटाती हुई काशी आज विश्व के सामने विकास के मॉडल के रूप में प्रस्तुत है। अत्याधुनिक काशी की नई तस्वीर को देखकर देश दुनिया के श्रद्धालु काशी की ओर खिचे चले आ रहे हैं।

संक्षिप्त खबरें

मनबढ़ ने किशोर को पीटकर किया घायल, मुकदमा दर्ज

प्रखर सहजनवां गोरखपुर। हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के ग्राम चेचुआपार निवासी राम सिंह पुत्र बृहस्पति ने थाना पुलिस को तहरीर देकर गांव के ही मनबढ़ युवक हरिकेश यादव पुत्र फूलदेव यादव के खिलाफ अपने लड़के सचिन सिंह को मारने पीटने तथा जान से मारने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। थाना क्षेत्र के ग्राम चेचुआपार निवासी राम सिंह पुत्र बृहस्पति ने थाना पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 26 मार्च को शाम साढ़े पांच बजे के करीब गांव में स्थित बटोही प्रजापति के किराना की दुकान पर हमारा लड़का सचिन सामान खरीदने गया था कि दुकान पर पहले से मौजूद हरिकेश यादव पुत्र फूलदेव यादव हमारे लड़के सचिन को किसी बात को लेकर भद्दी भद्दी गालियां देते हुए मारपीट कर घायल कर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लड़के सचिन को अस्पताल भिजवाया। इस संबंध में थानाध्यक्ष विशाल कुमार उपाध्याय ने बताया कि रामसिंह की तहरीर पर हरिकेश यादव के खिलाफ 323, 504, 506 आईपीसी मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

बृहस्पति फाउंडेशन ने सेनेटरी पैड का किया वितरण

प्रखर वाराणसी। अमरा खैरा नट बस्ती वाराणसी में बृहस्पति फाउंडेशन के द्वारा महिलाओ को मेन्सुरेशन हेल्थ के विषय में जागरूकता एवं सैनेटेरी पैड वितरण किया गया। आंचल सिंह ने सेनेटरी पैड से होने वाले फायदे को बताया व महिलाओ को कपडे के उपयोग से होने वाले बीमारी के बारे में बताया। अध्यक्ष अमित प्रजापति ने बताया की महिलाओ को

प्रत्येक महीने सेनेटरी पैड का वितरण फाउंडेशन की तरफ से किया जाएगा। बृहस्पति फाउंडेशन से रोहित सोनी, आशा पांडेय, छाया राजभर, रेनू पांडेय, संस्कृति आदि लोग मौजूद रहे।

समाजवादी युवजन सभा के जिला सचिव बनाये गए मोहित सिंह प्रदुम

प्रखर वाराणसी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के संस्तुति पर युवजन सभा के ज़िला अध्यक्ष अभिषेक मिश्रा (आर.डी) ने धरसौना (पवारेपुर) निवासी मोहित सिंह प्रदुम को युवजन सभा का ज़िला सचिव मनोनीत किया है। छात्र जीवन से ही हमेशा संघर्षरत रहने वाले मोहित सिंह प्रदुम

इससे पूर्व छात्रसभा के ज़िला सचिव रह चुके हैं। मनोनयन पर समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता हरीश नारायण सिंह, छात्रसभा महानगर अध्यक्ष आयुष यादव, सचिन सिंह,विवेक राय, अखिलेश, राहुल आदि सपा नेताओं व कार्यकताओं ने बधाई देकर हर्ष जताया।

सेवा निवृत कर्मचारी एवम पेंशनर्स ऐशोसियेशन चलायेगा मतदाता जागरूकता अभियान

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गाजीपुर सेवा निवृत कर्मचारी एवम पेंशनर्स ऐशो जनपद शाखा गाजीपुर के कोर कमेटी की बैठक कलेक्ट्रेट परिसर स्थित पेंशनर्स भवन में जिलाध्यक्ष मुक्तेश्वर श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमे सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि लोक तंत्र के पर्व का शुभारंभ हो चुका है,जनपद में सर्वाधिक मतदान कराने के लिए जनपद के वरिष्ठ नागरिक मतदाता जागरूकता अभियान प्रतिदिन चलाएंगे एवम अगले माह की मासिक बैठक 15 अप्रैल को मतदान के लिए सभी को शपथ दिलाई जाएगी।जिलाध्यक्ष मुक्तेश्वर श्रीवास्तव ने कहा कि अप्रेल के प्रथम सप्ताह में जिलाधिकारी महोदया से मिल कर पेंशनर्स भवन के आवंटन के लिए आभार एवम जर्जर भवन के जीर्णोद्धार,मरम्मत के लिए अपील करेगा। बैठक को मुख्य रूप से कार्यकारी अध्यक्ष अम्बिका दूबे, प्रख्यात कवि विजय कुमार मधुरेश, डी एन राय, बिरेंद्र सिंह, नरेंद्र सिंह, अशोक कुमार, एन बी सिंह, सुरेंद्र बहादुर सिंह, बाधु यादव, ज्ञानेंद्र सिंह, आदि लोग उपस्थित रहे, अध्यक्षता मुक्तेश्वर श्रीवास्तव,एवम संचालन जिला मंत्री जनार्दन सिंह ने किया।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं